वाप्कोस दर्पण

राजभाषा विशेषांक

14 सितम्बर

हिन्दी दिवस

अंक 102, जुलाई से सितम्बर, 2021

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केन्द्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा- हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
(सदैव ऊर्जावान : निरंतर प्रयासरत)

वाप्कोस दर्पण

राजभाषा विशेषांक
अंक 102 जुलाई-सितम्बर, 2021

संरक्षक
आर. के. अग्रवाल
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

सह-संरक्षक
अनुपम मिश्रा
निदेशक (वाणि. व मा.सं.वि.)
एवं अध्यक्ष, विराकास

मुख्य संपादक
प्रेम प्रकाश भारद्वाज
प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.)

संपादक
दलीप कुमार सेठी
प्रबंधक (रा.भा.का.)

उप संपादक
गीता शर्मा
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

सहयोग
शारदा रानी
वरिष्ठ सहायक

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

इस अंक में	पृष्ठ सं.
संदेश	2-8
हमारे अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक	9
सम्बोधन	10
सम्पादकीय	11
राजभाषा गतिविधियां	12
कोविड-19 की चुनौती बनाम वाप्कोस का कार्य निष्पादन	20
वाप्कोस के महानायक (कविता)	22
हिंदी कार्यशाला का आयोजन - लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय	23
चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता	25
राजभाषा प्रतिज्ञा - हिन्दी दिवस की झलकियां	28
सपने और हम (कविता)	34
हिन्दी दिवस/हिन्दी पखवाड़े की झलकियां - क्षेत्रीय/फील्ड कार्यालय	35
हिन्दी का गौरव (कविता)	39
नारी शिक्षा (लेख)	40
कुछ करने की जिद् (कविता)	41
आजादी (लेख)	42
कोरोना को हराना है (कविता)	43
कृत्रिम बुद्धिमत्ता (लेख)	44
हिन्दी दिवस के अवसर पर कविता	46
कामांध जिन्न (कहानी)	47
हमारा चुनाव (कविता)	52
अफगानिस्तान - गौरव गाथा	53
मैं कुर्सी हूं (कविता) – छूना है आसमान (कविता)	62
एक नजर - राहुघाट जल विद्युत परियोजना	63
जाति जल की (कविता) – परिवेश गीत (जल) (कविता)	64
मां..... तुझे तो सब पता है.....	65
हिन्दी हमारी मातृभाषा है (कविता) – "गणपति आरती"	66
हम वाप्कोस अभिमान हैं (कविता)	67

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

(अमित शाह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

आज़ादी का अमृत महोत्सव

गजेन्द्र सिंह शेखावत
Gajendra Singh Shekhawat

जल शक्ति मंत्री
भारत सरकार
Minister for Jal Shakti
Government of India

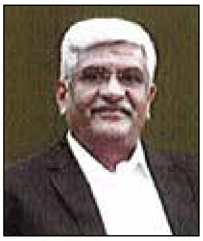

सत्यमेव जयते

0 8 SEP 2021

संदेश

हिंदी दिवस के अवसर पर आपको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत एक बहुभाषी देश है। यहां की सभी भाषाएं अपने आपमें समृद्ध और सक्षम हैं। हमारे संविधान निर्माताओं ने काफी सोच-विचार के बाद 14 सितम्बर, 1949 के दिन हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया है और संविधान सभा ने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया था कि स्वतंत्र भारत की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी होगी। उस समय भी यह एक ऐसी भाषा थी जिसे भारत की अधिकतर जनता बोल सकती थी।

राजभाषा के रूप में हिन्दी स्वीकार करने का मुख्य उद्देश्य है कि जनता का काम जनता की भाषा में सम्पन्न हो, उसमें कठिन भाषा शैली के लिए कोई स्थान नहीं होता। सरकारी कामकाज में हिन्दी की प्रगति एवं प्रचार-प्रसार के लिए आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। कार्यालय की भाषा में कठिन शब्दों का प्रयोग करके उसे बोझिल न बनाए।

आज के संदर्भ में जल संचयन और जल के उचित प्रयोग जैसे विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। जल शक्ति मंत्रालय के जल से जुड़े हुए कार्यकलापों से संबंधित जानकारी आम जनता की समझ में आने वाली सरल भाषा में प्रदान की जानी चाहिए। ऐसा करके हम अपने दायित्व को और अधिक महत्वपूर्ण ढंग से पूरा कर सकते हैं।

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय में उत्साह के साथ 'हिन्दी पखवाड़ा' समारोह आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर हम संकल्प लें कि हम अपने कामकाज में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करके संविधान के प्रति अपनी निष्ठा और समर्पण की भावना का परिचय दें।

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सब को पुन: मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

जल शक्ति अभियान

Office : 210, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
Tel: No. (011) 23711780, 23714663, 23714200, Fax : (011) 23710804
E-mail : minister-jalshakti@gov.in

विश्वेश्वर टुडु
BISHWESWAR TUDU

जल शक्ति एवं
जनजातीय कार्य राज्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली-110001
MINISTER OF STATE FOR
JAL SHAKTI & TRIBAL AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI - 110001

सत्यमेव जयते

संदेश

हिंदी दिवस पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हिन्दी हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है। भारत के संविधान के अनुसार भी संघ की राजभाषा हिन्दी है। राजभाषा हिन्दी में सरकारी कामकाज करने से सरकार और जनता के बीच परस्पर विश्वास बढ़ता है इसलिए हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करें। हमारा देश एक बहु-भाषी देश है जहां अनेक संस्कृतियां विद्यमान हैं। हिन्दी एक सेतु के रुप में काम कर रही है जो भारत की विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, और संप्रदायों को आपस में जोड़ती है।

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सरकार ने अनेक सुविधाएं एवं संसाधन उपलब्ध कराए हैं। कंप्यूटरों पर हिन्दी में काम करने में अब कोई कठिनाई नहीं है। अलग से किसी हिन्दी सॉफ्टवेयर के बगैर कंप्यूटरों पर यूनिकोड समर्थित फॉन्टस् के साथ आसानी से हिन्दी मे कार्य किया जा सकता है। साथ ही यह भी जरूरी है कि हम कम्प्यूटरों पर उपलब्ध इन आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिन्दी को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दें और राजभाषा द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की ईमानदार कोशिश करें।

मुझे उम्मीद है कि जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग के अधिक से अधिक अधिकारी और कर्मचारी 'हिन्दी पखवाड़ा' समारोह के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे।

'हिन्दी पखवाड़े' के इस शुभ अवसर पर मैं आप सभी को बधाई देते हुए 'हिन्दी पखवाड़े' की सफलता की कामना करता हूँ।

14.9.2021
(विश्वेश्वर टुडु)

215, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली -110 001, 215, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
दूरभाष : (011) 23708419, 23718759, फैक्स : 011-23354496, Tel. : (011) 23708419, 23718759, Fax : 011-23354496
415, 'बी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली -110 001, 415,'B' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110 001
दूरभाष : (011) 23070580, 23070669, Tel. : (011) 23070580, 23070669, E-mail : mos-tribalaffairs.gov.in

प्रहलाद सिंह पटेल
Prahlad Singh Patel

सत्यमेव जयते

जल शक्ति एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
राज्य मंत्री
भारत सरकार, नई दिल्ली
Minister of State for Jal Shakti and
Food Processing Industries
Government of India, New Delhi

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिनु निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।

हिन्दी के पुरोधा साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपनी प्रसिद्ध कविता निज भाषा में मानों हम सबकी बात कह दी है। मैं मानता हूं कि जिस तरह से किसी भी व्यक्ति की चेतना का निर्माण उसका धर्म, संस्कृति और साहित्य करता है। उसी तरह उसके मौलिक विचारों का जन्म भी उसकी अपनी भाषा में ही होता है। हम दिखावा भले कितना ही कर लें, लेकिन हमारे विचारों के विकास और सहजता के लिए, निज भाषा ही जरूरी है। राजभाषा होने के नाते हम सबका कर्तव्य भी बन जाता है कि हम सब अपना कार्य हिंदी में ही करें और इसके विकास में अपना योगदान दें।

जल अगर रुक जाता है, तो खराब होने लगता है। प्रवाह में रहता है, तो उसकी निर्मलता बनी रहती है। इसी तरह अगर हम अपनी राजभाषा का इस्तेमाल अपने कार्यालय के कार्यों में, बोलचाल में, पढ़ने-लिखने में करते रहेंगे तो हमारी भाषा हिन्दी का प्रवाह बना रहेगा और वह समृद्ध होती रहेगी। जिस तरह का आत्मसम्मान हमारे भीतर आकाश में लहराता तिरंगा जगाता है। वही स्वाभिमान हमारे भीतर समृद्ध सांस्कृतिक मूल्यों का गान करती, हिन्दी जगाती है।

हिन्दी दिवस के अवसर पर आप सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(प्रहलाद सिंह पटेल)
10/9/21

पेयजल एवं स्वच्छता विभाग : कमरा न.- 901, 'बी-1' विंग, पं दीनदयाल अंत्योदय भवन,
सी.जी.ओ. काम्पलैक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110 003, दूरभाष : 011-24368617, 24368618, 24368622
Department of Drinking Water and Sanitation : Room No. 901, 'B-1' Wing, Pt. Deendayal Antyodaya Bhawan,
C.G.O. Complex, Lodhi Road, New Delhi - 110 003, Tel : 011-24368617,24368618, 24368622
कैंप कार्यालय : 7-'बी' जनपथ, नई दिल्ली- 110001, दूरभाष : 011-23017383, मो. : 09096397307
Camp Office : 7-'B', Janpath, New Delhi -110001, Tel. : 011-23017383,, Mob. : 09096397307
E-mail : office.pspatel@gmail.com

पंकज कुमार
PANKAJ KUMAR
सचिव
SECRETARY
Tel. : 23710305, 23715919
Fax : 23731553
E-mail : secy-mowr@nic.in

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास
और गंगा संरक्षण विभाग
श्रम शक्ति भवन
रफी मार्ग, नई दिल्ली-110 001
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION
SHRAM SHAKTI BHAWAN
RAFI MARG, NEW DELHI-110 001
http://www.mowr.gov.in

अपील

भारत के संविधान के अनुसार भारत संघ की राजभाषा हिन्दी है। भारत में हिन्दी की व्यापकता और लोकप्रियता को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। हमारा यह दायित्व है कि केन्द्र सरकार के कार्यालयों में अधिकाधिक कार्य राजभाषा हिन्दी में करें। किसी भी समाज, राष्ट्र और सभ्यता की पहचान उसकी अपनी भाषा से होती है। भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम होती है। हिन्दी का प्रयोग बढ़ाना एक राष्ट्रीय कार्य है।

सरकारी कामकाज में पिछले कई वर्षों से हिन्दी का प्रयोग आगे बढ़ा है। हिन्दी को आगे बढ़ाने में विभिन्न प्रकार के मीडिया/सोशल मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, परन्तु उसी गति से सरकारी फाइलों में इसका प्रयोग नहीं बढ़ पाया है। सरकारी दफ्तरों में हिन्दी की गति को तीव्रता देने के लिए अभी और प्रयास करने की जरूरत है।

विभाग में दिनांक 14 सितम्बर, 2021 से 28 सितम्बर, 2021 तक "हिन्दी पखवाड़ा" आयोजित किया जा रहा है। इस दौरान हिन्दी से संबंधित कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। यह प्रतियोगिताएं न केवल आकर्षक हैं बल्कि ज्ञानवर्धक भी हैं। मुझे उम्मीद है कि विभाग के अधिक से अधिक अधिकारी और कर्मचारी इसमें भाग लेंगे और यह आयोजन हिन्दी में काम करने के लिए आप सभी को उत्साह और प्रेरणा प्रदान करेगा। हिन्दी में काम करने की भावना केवल हिन्दी पखवाड़े तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि पूरे वर्ष हिन्दी में कार्य किया जाना चाहिए ताकि हम अपने संवैधानिक दायित्वों को निभा सकें।

मुझे विश्वास है कि विभिन्न भाषाओं में सौहार्दपूर्ण समन्वय से हमारे मंत्रालय के सभी अधिकारी और कर्मचारी अपने सक्रिय सहयोग से राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देंगे।

इस अवसर पर, मैं आप सभी को बधाई देता हूँ और **'हिन्दी पखवाड़े'** के सफल आयोजन की कामना करता हूँ।

पंकज कुमार

(पंकज कुमार)

जल संरक्षण - जीवन संरक्षण
Conserve Water - Save Life

आर. के. अग्रवाल

अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक
वाप्कोस लिमिटेड

हमारे अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

श्री आर. के. अग्रवाल, जल शक्ति मंत्रालय के अंतर्गत भारत सरकार का उपक्रम वाप्कोस लिमिटेड के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक है। वह अभियांत्रिकी स्नातक है, उन्हें जल संसाधन अभियांत्रिकी में विशेषज्ञता और मास्टर डिग्री प्राप्त है और मार्केटिंग में विशेषज्ञता के साथ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में परास्नातक डिग्री भी है। उनके पास भारत तथा विदेशों में–कम्बोडिया, लाओ पीडीआर, म्यांमार, वियतनाम, श्रीलंका, मालदीव, मंगोलिया, तंजानिया, मोजाम्बिक, रवांडा तथा दक्षिण सुडान में जल संसाधन, विद्युत व अवस्थापना विकास परियोजनाओं की योजना, डिजाइन व कार्यान्वयन में 30 वर्षों से अधिक का अनुभव है।

श्री अग्रवाल विस्तृत सर्वेक्षण तथा फील्ड अन्वेषण, मास्टर योजना की तैयारी, शहर विकास योजना, व्यवहार्यता रिपोर्ट, विस्तृत परियोजना रिपोर्ट इत्यादि आयोजित करने में शामिल है। उनके पास परियोजना योजना, संविदा प्रबंधन, निर्माण पर्यवेक्षण तथा परियोजना कार्यान्वयन में प्रचुर अनुभव है। वह संगठन की व्यवसाय विकास गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल है।

श्री अग्रवाल ने भारत और विदेशों दोनों में बहुत सी प्रतिष्ठित परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया है और वाप्कोस के प्रौद्योगिकी पोर्टफोलियों के विस्तार हेतु कई सहयोगी साझेदारी बनाने का श्रेय भी उनको ही है।

श्री अग्रवाल जल शक्ति मंत्रालय के अंतर्गत भारत सरकार का उपक्रम और वाप्कोस की सहायक कम्पनी एनपीसीसी लिमिटेड के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक भी है।

आशा है कि श्री आर. के. अग्रवाल के ऊर्जस्वी नेतृत्व में वाप्कोस और एनपीसीसी नई ऊंचाइयां प्राप्त करेगा।

सम्बोधन

भारतीय संविधन सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। तभी से प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर ''हिंदी दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। भारत एक बहुभाषा देश है। कई अन्य भाषाओं के होते हुए भी हिंदी हम सबको एकता के सूत्र में पिरोए हुए है। हिंदी प्रारंभ से ही भारत के विशाल भू-भाग पर रहने वाले ज्यादातर भारतीयों की बोलचाल की भाषा रही है। वाप्कोस में प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी 01 सितम्बर से 15 सितम्बर 2021 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया।

इस दौरान हिंदी निबंध प्रतियोगिता, राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता, चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता तथा समूह 'घ' कर्मचारियों के लिए श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं के मूल्यांकन एवं कार्मिकों के उत्साहवर्धन हेतु जल शक्ति मंत्रालय के अधिकारियों को भी आमंत्रित किया गया। इन प्रतियोगिताओं में काफी कार्मिकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

इस शुभ अवसर पर मेरा सभी कार्मिकों से अनुरोध है कि वाप्कोस मुख्यालय तथा सभी फील्ड कार्यालयों के सभी कार्मिक एकजुट होकर यह संकल्प करें कि हम अपना अधिकतर सरकारी कामकाज हिंदी में करेंगे।

हिंदी पखवाड़े की सफलता के लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूं।

अनुपम मिश्रा

(अनुपम मिश्रा)
निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं
अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

सम्पादकीय

हिंदी पखवाड़े के पावन अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

किसी भी देश और समाज की प्रगति में उस देश की भाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। हिंदी की पत्रिकाओं के प्रकाशन से राजभाषा का पहलू उजागर होता है। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में प्रेरणा, प्रोत्साहन और प्रशिक्षण का विशेष महत्व है। पत्रिका किसी भी कार्यालय की गतिविधियों का आइना होती है। पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य कार्मिकों की हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाना होता है ताकि उनका हिंदी में काम करने का रुझान बढ़े।

जिस तरह अपने अधिकारों व दायित्वों के प्रति सजग रहना प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्तव्य है, ठीक उसी तरह अपनी राजभाषा का सम्मान करना भी प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है। अपने विचारों में परिवर्तन करते हुए राष्ट्रहित में हमें राजभाषा हिंदी के महत्व को समझना होगा क्योंकि विज्ञापनों, फिल्मों तथा टेलीविजन आदि के कारण आज हिंदी पूरे देश में तो लोकप्रिय चुकी है लेकिन सरकारी कामकाज में आज भी राजभाषा हिंदी अपना स्थान प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है। यह कार्य केवल नियमों और अधिनियमों के सहारे नहीं हो सकेगा। इसके लिए हम सभी को अपना अधिकतर काम हिंदी में करके अपने उत्तरदायित्वों को निभाने की अत्यन्त आवश्यकता है।

वाप्कोस में 01 सितम्बर से 15 सितम्बर 2021 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस दौरान कई प्रतियोगिताएं, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक तथा हिंदी कार्यशाला भी आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में गैर-तकनीकी कार्मिकों के साथ-साथ तकनीकी क्षेत्र से जुड़े अधिकारियों ने भी बड़े जोर-शोर व उत्साह के साथ भाग लिया। मैं इन सभी अधिकारियों का दिल की गहराइयों से अभिवादन करता हूं।

दिनांक 14.09.2021 को हिंदी दिवस के पावन अवसर पर वाप्कोस के दिल्ली/गुरुग्राम सहित सभी फील्ड कार्यालयों में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से प्राप्त ''राजभाषा प्रतिज्ञा'' सभी कार्मिकों को दिलाई गई।

''हिंदी दिवस'' के इस सुअवसर पर मैं आप सभी को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

(प्रेम प्रकाश भारद्वाज)
प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.)
एवं मुख्य संपादक 'वाप्कोस दर्पण'

राजभाषा गतिविधियां

- वाप्कोस में अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक के मार्गदर्शन में 01.09.2021 से 15.09.2021 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। कम्पनी के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध किया गया कि वे अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें ताकि भविष्य में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कम्पनी में अनुकूल वातावरण बनाया जा सके। हिन्दी पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई:-
    - हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता
    - चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता
    - राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता
    - श्रुतलेख प्रतियोगिता (केवल समूह "घ" कर्मचारियों के लिए)

    उक्त प्रतियोगिताओं में काफी कार्मिकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इन अवसरों पर जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय से अधिकारियों को मार्गदर्शन के लिए आमंत्रित किया गया और उत्तर पुस्किाओं की जांच करवाई गई।

- हिन्दी पखवाड़े के दौरान उक्त प्रतियोगिताओं के अलावा निम्नलिखित दो योजनाएं भी लागू की गई:-
    - विशेष अल्पकालिक राजभाषा नकद पुरस्कार योजना (टिप्पण/लेखन)
    - हिन्दी आशुलिपि/हिन्दी टंकण में कार्य करने की विशेष अल्पकालिक नकद पुरस्कार योजना।
- हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर वाप्कोस के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक की ओर से एक "सन्देश" भी जारी किया गया।
- दिनांक 10.09.2021 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में वाप्कोस की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।
- दिनांक 14.09.2021 को प्रात: 11.15 बजे हिंदी दिवस के पावन अवसर पर वाप्कोस के देश विदेश स्थित कार्यालयों में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से प्राप्त "राजभाषा प्रतिज्ञा" सभी कार्मिकों को दिलाई गई।

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED
हिन्दी पखवाड़ा
(01 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2021)
हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता
विषय : कोविड-19 की चुनौती बनाम वाप्कोस का कार्य निष्पादन
दिनांक : 01.09.2021

हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी पखवाड़ा
(01 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2021)
हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी पखवाड़ा
चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता

हिन्दी पखवाड़ा
चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता

हिन्दी पखवाड़ा
चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता
दिनांक : 02.09.2021

हिन्दी पखवाड़ा
(01 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2021)
राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता
दिनांक : 03.09.2021

हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी पखवाड़ा
सुलेख प्रतियोगिता

- हिंदी पखवाड़े के दौरान दिनांक 15.09.2021 को वाप्कोस में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में जल शक्ति मंत्रालय के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) को आमंत्रित किया गया जिन्होंने कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी तथा वाइस टाइपिंग का प्रशिक्षण भी दिया। इसके साथ-साथ उन्होंने कार्मिकों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2021-22 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों के बारे में बताया।

- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 23.08.2021 को वाप्कोस के पटना फील्ड कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्री दलीप कुमार सेठी, प्रबंधक (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 27.09.2021 को वाप्कोस के हैदराबाद परियोजना कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुरुग्राम की वर्ष 2021-22 की प्रथम छमाही बैठक श्रीमती देवश्री मुखर्जी, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष, नराकास, गुरुग्राम की अध्यक्षता में दिनांक 23.07.2021 को कोविड-19 महामारी की वजह से माइक्रोसाफ्ट टीम पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित की गई। बैठक में नराकास, गुरुग्राम के सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख या उनके प्रतिनिधि तथा उनके साथ हिन्दी अधिकारी भी आनलाइन उपस्थित थे। बैठक में श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वाणिज्य व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास, वाप्कोस तथा गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री कुमार पाल शर्मा भी आनलाइन उपस्थित थे। सबसे पहले प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) द्वारा बैठक में आनलाइन उपस्थित सभी कार्यालय प्रमुखों/प्रतिनिधियों व राजभाषा अधिकारियों तथा उप निदेशक (कार्यान्वयन) का हार्दिक स्वागत किया गया। तत्पश्चात अध्यक्ष महोदय की अनुमति से श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, सदस्य सचिव, नराकास, गुरुग्राम एवं प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) द्वारा बैठक की विभिन्न मदों पर विधिवत् रूप से चर्चा की गई।

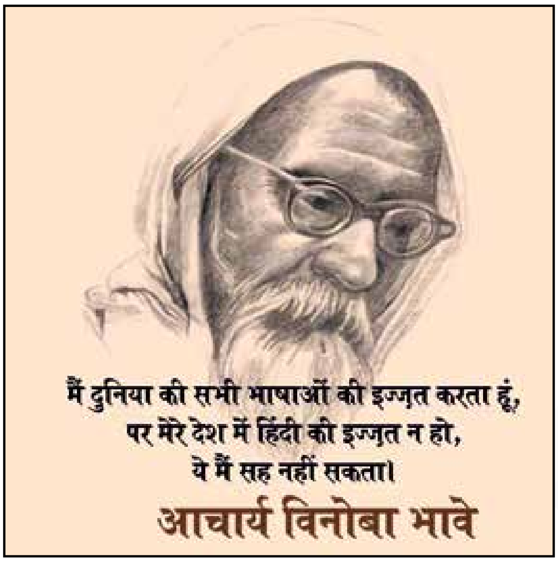

WAPCOS
हिन्दी
पखवाड़ा
(01 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2021)
हिन्दी कार्यशाला
दिनांक : 15.09.2021

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED
हिन्दी पखवाड़ा
(01 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2021)
विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित
निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबन्ध)

कोविड-19 की चुनौती बनाम वाप्कोस का कार्य निष्पादन

23 मार्च, 2020 को आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दूरदर्शन पर लॉक डाउन की घोषणा की जिसका कारण कोविड-19 से बचाव था। इस प्रसारण को देखते ही सभी के मन में संपूर्ण भारत बन्द का विचार आया। हर व्यक्ति अपने परिवार के भरण पोषण हेतु आवश्यक खाद्य सामग्री एकत्रित करने में लग गया। खाद्य सामग्री, दूध, दही, घी, तेल, सब्जियां, बिस्कुट, बोतल वाला जल आदि सामान दुकानों में समाप्त हो रहा था। चारों ओर त्राही-त्राही मची हुई थी। लग रहा था कि जीवन यापन शायद एक सप्ताह तक ही संभव हो सके। बैंकों के ATM से लोग नकदी निकाल रहे थे। ऐसा लग रहा था कि हम सब एक पुरा पाषाण युग की ओर अग्रसर हो रहे हैं। बच्चों का अध्ययन, बड़ों का व्यवसाय, गृहणियों का गृह प्रबंधन सब बेमाना-सा लग रहा था। व्यक्ति बाहर जाने में डर रहा था। घर में अपनों से शारीरिक दूरी बढ़ रही थी, लेकिन साथ में मानसिक दूरी घट रही थी। बच्चों एवं बड़ों ने बाहर से भोजन करना बंद कर दिया। सभी घरों में गृहणियों के हाथों का बनाया भोजन पसन्द करने लगे। इन्हीं सब घटना क्रमों में धीरे-धीरे चुनौतियां उत्पन्न होने लगीं, जिनके विषय में निम्नलिखित विवरण है।

चुनौतियां

1. इस दौरान लोगों का व्यवसाय एवं नौकरियां संकट में आ गई जिसके परिणाम स्वरूप कई घरों में आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया।
2. बच्चों के विद्यालय ना जाने से उनकी पढ़ाई-लिखाई पर असर दिखना स्वभाविक था।
3. घरों में रहने से लोगों में मानसिक उत्पीड़न महसूस होने लगा।
4. बाहर से आए कार्मिक एवं श्रमिक कई मीलों की पैदल यात्रा कर अपने-अपने गांवों एवं घरों को लौटने लगे।
5. कई परिवारों में लोगों के भूखे होने की चुनौतियां होने लगी।
6. लोग कोविड-19 से बीमार होने लगे। अस्पतालों में जगह नहीं बची। शमशानों एवं कब्रिस्तानों में भी जगह नहीं बची। बड़ा ही मार्मिक दृश्य था। विडम्बना यह थी कि लोग अपनों से ही दूर हो रहे थे। मरणोपरान्त अपने ही दर्शन नहीं कर रहे थे। कोविड-19 से ग्रसित मनुष्य अपने को मृत महसूस कर रहा था। इस बीमारी ने सभी धर्म एवं जाति के लोगों को ग्रसित किया तथा कई परिवार इसके चलते बर्बादी की ओर अग्रसर हो रहे थे। ऐसा लग रहा था कि यह एक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आपदा है जो कि एक प्रलय की ओर बढ़ रही है।

7. वाप्कोस का अधिकारी होने के नाते वाप्कोस के अस्तित्व के प्रति भी चिंता होने लगी क्योंकि वाप्कोस के कारण कई हजारों लोगों का जीवन यापन होता है।

उपरोक्त चुनौतियों के बावजूद वाप्कोस का कार्य निष्पादन सराहनीय रहा जो कि निम्नलिखित है:

वाप्कोस का कार्य निष्पादन

1. अप्रैल 2020 के प्रारम्भ में ही वाप्कोस के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय ने प्रत्येक वरिष्ठ अधिकारियों से दूरभाष द्वारा संपर्क किया तथा परिवार एवं अधीनस्थ कर्मचारियों के स्वास्थ्य के विषय में जानकारी प्राप्त की।
2. वरिष्ठ अधिकारियों को एक सूत्र में गठित रखने के उद्देश्य से वाट्सऐप पर एक समूह बनाया और सारी अधिकारिक घोषणाएं की जाने लगी। सभी को घरों से ही कार्य करने का सुझाव दिया गया।
3. सभी अनुमोदन इंटरनेट द्वारा होने लगे तथा विभिन्न संस्थाओं एवं ग्राहकों से इटरनेट के माध्यम से संपर्क होने लगा जिससे वाप्कोस के कार्य निष्पादन एवं आय सुनिश्चित होने लगीं। वाप्कोस की इस आय से सभी को वेतन मिले तथा सभी के परिवारों का भरण पोषण सुनिश्चित हो सका।
4. वाप्कोस के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने अपना 3 दिनों का वेतन **"प्रधानमंत्री केयर फण्ड"** में अनुदान दिया।
5. वाप्कोस ने अपने सभी क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा भोजन सामग्री व जरूरी सामान जरूरतमन्द लोगों में वितरित किया जो कि हमें आदर का भाव प्रतीत करवाता है।
6. वाप्कोस ने अपने अधीनस्थ सभी संस्थाओं को भी इस कोविड-19 के दौरान भुगतान किया।
7. उपरोक्त कारणों से मैं स्वयं को वाप्कोस का अधिकारी होने के नाते वाप्कोस की प्रगति की कामना करता हूँ।

– मनोज नागर
महा प्रबंधक (जल प्रबंधन)

हिन्दी को आगे बढ़ाना है, उन्नति की राह पर ले जाना है ।
केवल एक दिन ही नहीं हमने, नित हिन्दी दिवस मनाना है ॥

गर्व हमें है हिन्दी पर, शान हमारी हिन्दी है ।
कहते-सुनते हिन्दी हम, पहचान हमारी हिन्दी है ॥

वाप्कोस के महानायक

वाप्कोस में सी.एम.डी. पद, एक साल से खाली था।
अंदर हो या बाहर, हर कोई सवाली था।
अब जाके उस पद पर, चयनित वो यकायक हुए।
वाप्कोस परिवार के सन्मुख, इस दशक के महानायक हुए।।

दूर अंधेरे तमाम हुए, उस रात अंधेरी काली में।
नयी उम्मीदों ने जन्म लिया, फिर प्रभात की लाली में।।
अब दौर खुशी का आया है, दिल में उमंग भी लाया है,
क्योंकि, श्री आर.के. अग्रवाल जी, इस सेना के सेनानायक हुए।
वाप्कोस परिवार के सन्मुख, इस दशक के महानायक हुए।।

दूर कहीं जो दिखती थी, उपलब्धियां इस संगठन की।
हासिल होंगी लगता है अब, उनमें से अधिकतम ही।।
आपके मार्गदर्शन में काम करना, हमारा सौभाग्य है श्रीमान,
आपकी अप्रतिम समझ–बुझ और व्यापक अनुभव से,
आपके सभी फैसले अवधायक हुए।
वाप्कोस परिवार के सन्मुख, इस दशक के महानायक हुए।।

प्रगति की एक नयी रफ्तार, एक नयी दिशा पकड़नी है।
हर उपलब्धि और हर ऊंचाई, अब हमें जकड़नी है।।
आपके आने से ये उम्मीद है, के दूर सब दिन कष्टदायक हुए,
4000 परिवार धन्य हुए, क्योंकि, आप उन सबके बलदायक हुए।
वाप्कोस परिवार के सन्मुख इस दशक के महानायक हुए।।

–प्रेम प्रकाश भारद्वाज
प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.)

हिंदी कार्यशाला का आयोजन
लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय

वाप्कोस लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 17 सितम्बर, 2021 को राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा संबंधी अधिनियमों, नियमों एवं आदेशों के अनुपालन हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रतिभाग किया। अथिति वक्ता के रुप में श्री देवकी नंदन 'शांत', सेवानिवृत अधीक्षण अभियंता उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर गणमान्य अतिथि के रूप में श्री राजन प्रसाद, शीर्ष स्तर विशेषज्ञ की गरिमामयी उपस्थिति प्रेरणादायी रही। राजभाषा अधिकारी श्री विनीत चौधरी, उप मुख्य अभियंता ने श्री देवकी नंदन को पुष्प गुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया तथा कार्यशाला का संचालन श्री प्रेम प्रकाश पांडेय, क्षेत्र पर्यवेक्षक, द्वारा किया गया किया। इसके उपरांत श्री देवकी नंदन ने हिंदी भाषा की व्यथा पर आधारित कुछ अपनी रचनायें सुनाई किन्तु यह भी आश्वस्त किया कि शीघ्र ही हिंदी को राष्ट्रीय राजभाषा के रूप में मान लिया जायेगा। उन्होंने सरल, सुबोध एवं आसान शब्दों का प्रयोग करने पर जोर देते हुए यह उदघाटित किया कि राजभाषा संबंधी आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करें। इसके अलावा उन्होंने अपनी कुछ और रचनायें भी सुना कर सबको मंत्र मुग्ध कर दिया।

इसके पश्चात् श्री राजन प्रसाद, अतिथि वक्ता ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व है तथा अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी भाषा के माध्यम से करने पर जोर देते हुए ऐसे कार्यक्रमों की उपयोगिता पर बल दिया। उन्होंने हिंदी की महत्ता के बारे में भी बताया एवं अपने कुछ अनुभव भी साझा किये। तत्पश्चात श्री प्रेम प्रकाश पांडेय, क्षेत्र पर्यवेक्षक एवं श्री अशोक ओझा, क्षेत्र पर्यवेक्षक ने कविता पाठ किया एवं श्री प्रफुल्ल प्रसाद, कनिष्ठ अभियन्ता ने अपने कुछ हिंदी से सम्बंधित अनुभव साझा किये। श्री विवेक शुक्ला, सहायक प्रणाली अधिकारी ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लखनऊ को प्रेषित, जनवरी-जून, 2021 छमाही राजभाषा प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की और हिंदी को लेकर अपने कुछ अनुभव भी साझा किये। अंत में श्री विनीत

चौधरी, उप मुख्य अभियंता ने पिछली तिमाही के दौरान कार्यालय में हिंदी में किये गए कार्यों की सराहना की एवं भविष्य में भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने पर बल दिया।

अतिथि वक्ताओं ने मुख्य अतिथि को धन्यवाद करते हुए राजभाषा नीति, पत्राचार के विभिन्न रूपों जैसे कार्यालय टिप्पणी, परिपत्र, ज्ञापन, कार्यालादेश, पारिभाषिक शब्दावली एवं व्यावहारिक व्याकरणिक समस्याओं व उनका समाधान तथा राजभाषा नीति के प्रमुख बिन्दुओं पर चर्चा की। कार्यशाला अत्यंत उपयोगी एवं उदेश्यपूर्ण रही। कार्यक्रम का समापन अतिथियों एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित कर एवं जलपान इत्यादि के उपरांत किया गया।

चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त आलेख)

अभिव्यक्ति

चित्रकार ने जो चित्र बनाया है जो कि हमें दिखाया गया है। इस चित्र में चित्र के माध्यम से खेल को महत्व देते हुए खेल का लाभ ओर उसके द्वारा हमारे देश का सम्मान दोनों ही मिलते हैं। जो कि चित्रकार चित्र के माध्यम से हमें बताना चाहता है। जैसे कि अभी हाल ही में हुए ओलंपिक ओर पैरा ओलपिंक में हमारे देश के खिलाड़ियों ने भाग लिया ओर मेडल (पदक) भी जीते। जिससे भारत देश का नाम विदेशों में भी हुआ ओर इस पर हम सब भारतीयों को गर्व महसूस हुआ।

खेल क्या है

खेल का मतलब होता है जो कि मनुष्य के द्वारा शारीरिक ओर मानसिक दोनों गतिविधियां उचित समय पर प्रयोग करना। खेल का अर्थ प्रत्येक खेल के लिए विभिन्न प्रकार से निकाला जा सकता है। लेकिन हमेशा खेल को खेल की भावना से ही खेला जाना चाहिए इसमें कभी भी आपसी दुश्मनी नहीं निकालनी चाहिए। खेल कोई नया शब्द या नया तरीका नहीं है। यह तो प्राचीन समय से उपयोग होना वाला है।

चित्र में दिखाये गए खेल

1. हाकी
2. टेबल टेनिस
3. फुटबाल

4. बास्केट बाल (टोकरी गेंद)
5. मुक्काबाजी (बाक्सिंग)

हाकी

हाकी खेल तो भारत देश का परम्परागत ओर प्राचीन समय से खेला जाने वाला खेल है। जो कि भारत का राष्ट्रीय खेल भी है।

भारत के राष्ट्रीय खेल हाकी के महान खिलाड़ी मेजर ध्यान चन्द बहुत ही महान खिलाड़ी थे जिन्होंने भारत देश का नाम रोशन किया। हाल ही में खेल अवार्ड में मेजर ध्यान चन्द खेल अवार्ड का नाम भी जुड़ गया है।

हाकी टीम ने हाल ही में ओंलपिंक में पांच पदक जीत कर भारत देश का नाम रोशन किया है। ओर बालिकाओं का भी अच्छा प्रदर्शन रहा है।

टेवल टेनिस ओर बेडमिंटन

यह भी भारत की जनता के द्वारा खेला जाने वाला एक आम खेल है। जोकि हमें हर गली मोहल्ले ओर कॉलोनियों में बच्चे खेलते दिखाई देते हैं। बेडमिंटन में भी भारत की महिलाओं द्वारा अच्छा प्रदर्शन रहा है।

पी.वी. सिद्धु द्वारा लाया गया ब्रांज पदक ओर पैरा ओलपिंक में कृष्णा द्वारा लाया गया सिल्वर पदक से भी भारत देश का नाम रोशन हुआ।

फुटबॉल

फुटबॉल खेल भी आम खेलों की तरह खेला जाने वाला खेल है। इसे भी सभी जगह देखा जा सकता है। इसमें भी हमारे खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। जोकि गर्व की बात है।

टोकरी गेंद (बास्केट बॉल)

यह खेल भी विद्यालय और महाविद्यालय में खेलते देखा जा सकता है। इसके लिए भी एक निश्चित ओर विशेष खेल मैदान की आवश्यकता होती है।

मुक्का बाजी (बाक्सिंग)

यह खेल इतना आसान नहीं होता है। इसमें दो लोग एक दुसरे पर मुक्कों के द्वारा प्रहार करते हैं। यह खेल भी भारत को पदक दिला चुका है। इसमें विजेन्द्र के द्वारा ओलपिंक में पदक मिला था जोकि 2016 के ओलपिंक में प्राप्त किया था। यह खेल हर जगह खेलते नहीं देखा जा सकता। इसे विशेष खेल मैदान में खेलते देखा जा सकता है।

उपसंहार

इस चित्र में हमें जो दिखाया गया है। वो सभी खेल हैं और खेल से हमें बहुत लाभ मिलते हैं और लाभ के साथ-साथ यदि मनुष्य इसे अपने भविष्य का भाग बना ले तो वह बहुत कामयाब भी हो सकता है। जैसे कि हमारे देश के बहुत से खिलाड़ियों ने देश का नाम रोशन करके अपना भविष्य भी बना लिया। जैसे कि नीरज चोपड़ा, पी.वी. सिंद्धु, कृष्णा पूनिया, पैरा ओलपिंक में भी खिलाड़ियों ने अपना भविष्य बना लिया। कृष्णा, सोनल, सुरेन्द्र गुर्जर आदि लोग विशेष योग्य जन होकर भी देश का नाम रोशन किया।

खेल से ना केवल धन एकत्रित (कमाया) किया जा सकता है इससे मनुष्य शारीरिक रूप से स्वस्थ भी रहता है। ओर जीवन में उसे बहुत-सी बीमारियों का सामना नहीं करना पड़ता है। इससे स्वस्थ जीवन जिया जा सकता है।

मनुष्य को अपने दैनिक जीवन में खेल को लाना चाहिए किसी भी दिन महीने में और सुबह-शाम जब भी कार्यालय समय पूरा होने के बाद घर जाकर ओर अपने सहकर्मियों के मेलजोल से सप्ताह में समय निकालकर खेलना चाहिए।

खेल खेलने से लाभ

खेल से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। ओर हमारे शरीर के व्यायाम भी हो जाते हैं। न केवल व्यायाम होते हैं बल्कि हमारा मानसिक रूप से भी विकास होता है। खेलों के द्वारा मनुष्य सामाजिक भी होता है और वह नये-नये लोगों से भी मिलता है जिससे वह लोगों से मिलने से समाज और अपने आसपास की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करता है।

खेल को खेलने से व्यायाम तो होता ही है इससे जब हम मैदान में खेलते हैं तो शरीर में होने वाली परेशानियां भी सामने आती हैं जिससे हम अपना समय पर इलाज करके अपनी उम्र को लम्बी कर सकते हैं। ये सब करने से बहुत लाभ प्राप्त होते हैं जोकि हमारे जीवन ओर दैनिक जीवन में बहुत ही जरूरी है।

खेल को बढ़ावा देने के प्रभाव

खेलों को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार बहुत ही योजनाबद्ध कार्य कर रही है। इसके लिए जिला स्तर पर खेल मैदानों का निर्माण किया जा रहा है। और खिलाड़ियों को अच्छी-अच्छी जगह रोजगार (नौकरियां) दिये जा रहे है ओर उचित इनाम देने का भी प्रबंध किया जा रहा है।

खेल को हमेशा खेल की भावना से ही खेलना चाहिए जो कि बहुत ही जरूरी है।

– रविन्द्र कुमार
अभियंता
नदी विकास प्रभाग

हिन्दी दिवस के अवसर पर "राजभाषा प्रतिज्ञा" के फोटोग्राफ्स

निदेशक (वाणि. व मा.सं. वि.) कार्यालय

योजना, विकास एवं विधि प्रभाग

आर.यू.डी. प्रभाग

पर्यावरण प्रभाग

कार्मिक एवं प्रशासन प्रभाग

नदी विकास प्रभाग

सतर्कता प्रभाग

इलैक्ट्रो-मैकेनिकल प्रभाग

वित प्रभाग, गुरुग्राम कार्यालय

हाइड्रो पावर डिविजन

आई.टी. प्रभाग

सी.एस.आर. प्रभाग

पत्तन, बंदरगाह एवं अंतराज्जयीय जलमार्ग प्रभाग

जी.आई.एस. प्रभाग

पावर डिविजन

जल प्रबंधन प्रभाग

ट्रांसमिशन एवं डिस्ट्रिब्यूशन प्रभाग

सिविल डिजाइन प्रभाग

निर्माण प्रबंधन यूनिट

हैदराबाद कार्यालय

कोलकाता कार्यालय

कोचीन कार्यालय

विशाखापट्टनम कार्यालय

जयपुर कार्यालय

रायपुर कार्यालय

पटना कार्यालय

देहरादून कार्यालय

भुवनेश्वर कार्यालय

लखनऊ कार्यालय

भोपाल कार्यालय

पंचकुला कार्यालय

जबलपुर कार्यालय

रांची कार्यालय

अहमदाबाद कार्यालय

गुवाहाटी कार्यालय

गांधीनगर कार्यालय

तुर्गा परियोजना, कोलकाता

विदेशों में ''राजभाषा प्रतिज्ञा''

भूटान कार्यालय

तनजानिया

कूरी-गांगरी परियोजना, भूटान

मंगोलिया कार्यालय

सपने और हम

सपने तुम इस जीवन में, ना दूर हुए एक पल के लिए।
तुम्हीं साथ हो बचपन से, पूरा होने कि इच्छा प्रबल लिए।।

आँखों में सपने लिए, दुनिया से बेखबर, हम स्कूल को चल दिए।
कुछ सपने माँ बाप ने पूरे कर दिए, और कुछ के लिए हमें अकल दिए।।
क्या खूब जमाना था यारों, ना वक्त की चिंता, ना पढाई की टेंशन थी।
खेल कूद और मौज मस्ती, बस यही सब में बिता सब आजकल दिए।।

फिर सपने बढ़ते गए और हम कक्षा चढ़ते गए।
स्कूल गया और कॉलेज आया, और हम घर से निकल लिए।।
निकल क्या लिए, पूरी मौज थी, कॉलेज में क्या करना है, बस यही खोज थी।
बंक मार कैंटीन बैठना, कॉन्ट्री करके खाना पीना, बस इसी में नाम उज्जवल किये।।

कॉलेज के अंत में, आँखों में कुछ पल थे, बेशक हम चंचल थे, पर इरादे अटल थे।
एक दिन दुनिया कदमों के नीचे, सब होंगे हमारे पीछे, यही सोच, अलविदा सब कॉलेज मंडल किये।।
एक वो दिन था, एक आज का दिन है, ना यार मिले ना तृष्णा मिटी।
बस दौड़ रहे हैं जीवन की दौड़, आँखों में सपना लिए 'काश बेहतर कल जियें'।।

पर शुक्रगुजार उस दाता का हूँ, जिसने माँ बाप के चरणकमल दिए।
जिन्होंने हमारी भूख मिटाई, हर चीज की मौज कराई, मेरे सब सपने असल किये।।
पड़ा रहूँ इन्हीं चरणों में, बस इतनी सद्‌बुद्धि दो भगवान।
भटक ना जाऊँ, उस ईश्वर से, जिसने मेरे लिए, अपने सब सपने कत्ल किये।।

सपने तुम इस जीवन में, ना दूर हुए एक पल के लिए।
तुम्हीं साथ हो बचपन से, पूरा होने कि इच्छा प्रबल लिए।।

–दीपक प्रकाश
अभियंता

वाप्कोस के क्षेत्रीय/फील्ड कार्यालयों में दिनांक 01.09.2021 से 15.09.2021 के दौरान आयोजित 'हिन्दी दिवस'/'हिन्दी पखवाड़े' की झलकियां

भोपाल कार्यालय

दिनांक 01.09.2021 से 15.09.2021 तक वाप्कोस के भोपाल कार्यालय में **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। इस दौरान सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को मातृभाषा में काम-काज को बढ़ावा देने के निर्देश दिए गए। इस कार्यक्रम के दौरान दिनांक 11 सितम्बर, 2021 को चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के लिए श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त निबंध प्रतियोगिता, आशु भाषण प्रतियोगिता एवं राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। कार्यालय द्वारा दिनांक 14.09.2021 को हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री हंस कुमार जैन, मुख्य अभियंता, नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग एवं श्रीमती प्रीति जैन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान श्री एस.जी. फडके (टीएलई) द्वारा **"हिन्दी भाषा के महत्व"** विषय पर भाषण दिया गया। वाप्कोस भोपाल कार्यालय के पुरूष एवं महिला समूह द्वारा एक-एक गीत प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम को आगे बढाते हुए परियोजना प्रबंधक डॉ. उदय रोमन द्वारा स्वरचित कविता की प्रस्तुति की गई एवं भाषण भी दिया गया। पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों में सभी कार्मिकों ने बड़े उत्साह के साथ बढ़-चढ कर हिस्सा लिया।

हैदराबाद कार्यालय

वाप्कोस के हैदराबाद कार्यालय में दिनांक 01.09.2021 से 15.09.2021 तक 'हिन्दी पखवाड़े' का आयोजन किया गया। दिनांक 13 सितम्बर, 2021 को "टीकाकरण की उपयोगिता व लाभ" तथा "कोविड-19 द्वारा उत्पन्न आर्थिक संकट और इसके उपाय" विषयों पर हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक 14 सितम्बर, 2021 को 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर प्रातः 11.15 बजे कार्मिकों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई गई तथा दिनांक 15.09.2021 को प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए।

बैंगलूरू कार्यालय

वाप्कोस के बैंगलूरू कार्यालय में दिनांक 01 से 15 सितम्बर, 2021 तक **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। इस दौरान दिनांक 14.09.2021 को **'हिन्दी दिवस'** मनाया गया तथा प्रातः 11.15 बजे कार्मिकों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई गई और कार्यालय के कामकाज में ज्यादा से ज्यादा हिन्दी के प्रयोग करने का अनुरोध किया।

गांधीनगर कार्यालय

वाप्कोस के गांधीनगर क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 01 से 15 सितम्बर, 2021 तक 'हिन्दी पखवाड़े' का आयोजन किया गया। इस दौरान 14.09.2021 को 'हिन्दी दिवस' का आयोजन किया गया जिसमें कार्मिकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इस दौरान सभी कार्मिकों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई गई तथा विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता क्षेत्रीय परियोजना निदेशक श्री एस.के. श्रीवास्तव ने की तथा सभा का संचालन हिन्दी प्रभारी श्री रजनी कांत पटेल, परियोजना प्रबंधक ने किया और सभी कार्मिकों से कार्यालय का अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए आग्रह किया। इस दौरान उप मुख्य अभियंता, श्री जयेश दर्जी ने कार्यालय में अपने काम-काज व तकनीकी शब्दों को हिन्दी में करने का आग्रह किया। अंत में अध्यक्ष महोदय के

समापन भाषण के साथ उपस्थित सभी अधिकारी व कर्मचारीगण का धन्यवाद किया और आगे अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रेरणा दी।

अहमदाबाद कार्यालय

वाप्कोस के अहमदाबाद कार्यालय में दिनांक 01.09.2021 से 15.09.2021 तक 'हिन्दी पखवाडे ' का आयोजन किया गया। दिनांक 14 सितम्बर, 2021 को 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर प्रातः 11.15 बजे "राजभाषा प्रतिज्ञा" एस.एस.पी. फील्ड कार्यालय में अपर मुख्य अभियंता श्री राजेश सैनी द्वारा समस्त कार्मिकों की उपस्थिति में ली गई ताकि राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं दैनिक उपयोग में लाने के लिए अपना योगदान जारी रखें। इसी क्रम दोपहर 3.00 बजे क्षेत्रीय परियोजना प्रबंधक श्री एस.के. श्रीवास्तव की अध्यक्षता एवं मार्गदर्शन में गांधीनगर तथा अहमदाबाद कार्यालय के कर्मचारीगण की उपस्थिति में सामूहिक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक का उद्देश्य हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना, हिन्दी कार्यशालाओं द्वारा कार्मिकों को प्रोत्साहित करना था। बैठक में सभी कार्मिकों ने अपने विचार एवं अनुभव साझा करे।

पुणे कार्यालय

'हिन्दी दिवस' के अवसर पर दिनांक 14 सितम्बर, 2021 को वाप्कोस कार्यालय, पुणे में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य लगातार हमारे समाज एवं संस्कृति में हिन्दी के प्रति लोगों में कम होती

हुई रूचि से कार्मिकों को अवगत कराना था, साथ ही लोगों में अपनी भाषा के प्रति लगाव, उत्साह एवं जागरूकता पैदा करना था। लगातार हमारे समाज में लोगों का अंग्रेजी के प्रति झुकाव बढ़ता जा रहा है, ऐसे में हमारी भाषा को बचाने के लिए कार्यालय, समाज एवं राष्ट्रीय स्तर पर इस तरह के कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किए जाने चाहिए।

कार्यक्रम में सभी अधिकारियों ने हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए एवं लगभग सभी ने हिन्दी में गद्य व पद्य पढ़ा और आगे भी ऐसे समारोह करवाने के लिए प्रस्ताव रखा। अंत में श्री बालकृष्ण, परियोजना प्रबंधक जी ने हिन्दी भाषा के महत्व को समझाया एवं कविताएं प्रस्तुत की तथा सभी कार्मिकों को धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

हैदराबाद कार्यालय में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 27.09.2021 को वाप्कोस के हैदराबाद कार्यालय में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) तथा श्री एम.सी. भारद्वाज, सलाहकार, जल शक्ति मंत्रालय भी उपस्थित थे। श्री आर.वी. रमण, मुख्य अभियंता, हैदराबाद द्वारा मंत्रालय के अधिकारियों का पुष्पगुच्छ दे कर स्वागत किया। इसके बाद निदेशक (रा.भा.) द्वारा हैदराबाद कार्यालय के कार्मिकों को वॉयस टाइपिंग की जानकारी दी तथा अभ्यास करवाया। वॉयस टाइपिंग के अभ्यास के बाद उन्होंने उपस्थित कार्मिकों को राजभाषा नियमों की जानकारी दी। कार्यशाला के उपरांत उन्होंने हैदराबाद कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण भी किया। इस दौरान मुख्यालय से श्री दलीप कुमार सेठी, प्रबंधक (रा.भा.का.) तथा श्री राजेन्द्र कुमार, उप प्रबंधक (कार्मिक) भी उपस्थित थे।

(कविता)

हिन्दी का गौरव

हिंदी हिन्दुस्तान की,
भाषा ये अभिमान की,
सबसे सुंदर व अनोखी,
ज्ञान के भंडार की।

इसमें साहित्य की बातें,
त्याग और बलिदान की,
युगों से कहती कहानी,
युद्ध और विराम की।

हिंदी में छंद, अलंकार,
कविताएं रस पान की
व्याकरण से तुली ये,
शुद्ध भाषा हर वर्ग की।

विभिन्नता में एकता,
प्यार और सम्मान की,
हिन्द देश में दर्शाती,
बातें आचरण व्यवहार की।

विश्व में विख्यात आज,
हिंदी पहचान हिंदुस्तान की,
प्रभावी इसकी संस्कृति
मानव जगत कल्याण की।

-राजेन्द्र कुमार
उप प्रबंधक (का.)

लेख

नारी शिक्षा

जहां तक शिक्षा का प्रश्न है यह नारी की हो या पुरुष की दोनों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। शिक्षा का कार्य तो व्यक्ति के विवेक को जगा कर उसे सही दिशा प्रदान करना है। शिक्षा सभी का समान तरीके से हित करती है। परन्तु फिर भी भारत जैसे विकासशील देश में नारी की शिक्षा का महत्व इसलिए अधिक है कि वह देश की भावी पीढ़ी को योग्य बनाने के कार्य में उचित मार्गदर्शन कर सकती है। बच्चे सबसे अधिक माताओं के संपर्क में रहते हैं। माताओं के संस्कारों का व्यवहार का व शिक्षा का प्रभाव बच्चों के मन मस्तिष्क पर सबसे अधिक पड़ा करता है। शिक्षित माता ही बच्चों के कोमल उर्वर मन मस्तिष्क में उन समस्त संस्कारों के बीच वह शक्ति है जो आगे चलकर अपने समाज देश और राष्ट्र के उत्थान के लिए परम आवश्यक हुआ करते हैं।

नारी का कर्त्तव्य बच्चों का पालन पोषण करने के अतिरिक्त अपने घर परिवार की व्यवस्था और संचालन करना भी होता है। एक शिक्षित और विकसित मन-मस्तिष्क वाली नारी अपनी उपस्थिति से घर के प्रत्येक सदस्य की आवश्यकता आदि का ध्यान रखकर उचित व्यवस्था एवं संचालन कर सकती है। विद्वानों का कथन है कि गृहस्थी के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है। विश्व की प्रगति शिक्षा के बल पर ही चरम सीमा तक पहुंच सकी है। यदि नारी शिक्षित हो तो उसका पारिवारिक जीवन स्वर्ग सा हो सकता है और उसके साथ-साथ वह देश, समाज और राष्ट्र की प्रगति में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने में समर्थ हो सकती है।

आज स्वयं जाति समाज के सामने घर, परिवार, परिवेश, समाज, रीति-नीतियों तथा परंपराओं के नाम पर जो अनेक तरह की समस्याएं उपस्थित हैं उनका निराकरण नारी-जाति शिक्षित होकर ही कर सकती है। इन सब बुराइयों को दूर करने के लिए नारी शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा के द्वारा नारी-जाति समाज की अनेक कुरीतियों व कुप्रथाओं को मिटा सकती है और अपने ऊपर लगे लांछनों का सहज ही निराकरण करने में सक्षम हो सकती है।

आज की नारी शिक्षा के प्रति पूर्ण रूप से जागृत तथा सजग है। नारी जाति की क्रांति भावना देखकर ही आज पुरुष भी नारी को लोहा मानते हैं। आज हमारी

सरकार भी गांव-गांव, शहर-शहर पहुंचकर महिला वर्ग के लिए अलग शिक्षा संस्थाओं को मान्यता प्रदान कर रही है। आज का तो नारा भी यही है कि "पढ़ी-लिखी लड़की, रोशनी घर की।"

नारी शिक्षा के कारण ही आज प्रत्येक सरकारी तथा गैर-सरकारी विभाग में नारी उच्च पद पर कार्यरत है। वह अपना कार्य पूरी कुशलता से करती है। नारी ही एक ऐसी जीव है जो घर और बाहर दोनों की जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभा सकती है।

वास्तव में नारी शिक्षा का विशेष महत्व है। महिलाओं को साथ लिए बिना देश का पूर्ण विकास संभव नहीं है। आज की नारी पति का आर्थिक सहयोग कर परिवार की उन्नति में सहायक सिद्ध हो रही है। आज नारी में आत्म बल, आत्म सम्मान तथा आत्मविश्वास की कोई कमी नहीं है।

संस्कृत में यह उक्ति प्रसिद्ध है **"नास्ति विद्यासमं चक्षुर्नास्ती मात्र समोगुरू"** इसका मतलब यह है कि इस दुनिया में विद्या के समान नेत्र नहीं है और माता के समान गुरू नहीं है शिक्षा व्यस्क जीवन के प्रति स्त्रियों के विकास के लिए एक आधार के रूप में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

– श्वेता पसरीजा
उप प्रबंधक (कार्मिक)

कविता

कुछ करने की जिद्द....

खत्म की कहां सोचूं मैं, अभी तो शुरू हुई कहानी है,
अंबर में बादलों की गर्जन मध्य स्वयं के स्वर को गुंजानी है.....
विध्वंस-विध्वंशकारी प्रलयकाल में,
जड़ से उखड़ रही कल्पित लताओं के लिए भी
बाजी अपने प्राण की लगानी है.....
मानव-हित में कुछ करने हेतु पूरे अवसर
तो शिला भी पिघलानी है.....
दृष्टि से दूर कहां है कुछ भी, है भी तो तब तक
जब तक कि अंतर्मन में कुछ करने का जोर नहीं है,
हों रही अकल्पनीय पीड़ाएं खुद तक पहुंची शोर नहीं है.....
अब तो विचारना कुछ भी शेष नहीं है.....
बस अब तो युद्ध के मैदान में उतर जाना है और
अपनी हर एक प्रहार की मतलब बतलानी है.....
खत्म की कहां सोचूं मैं.....अभी तो शुरू हुई कहानी है.....

-पूजा कुमारी,
डी.ई.ओ.,
अवस्थापना प्रभाग

लेख

आजादी

इस प्रकृति में पंछी ही एक ऐसा जीव है जिसे आजादी की निशानी माना जाता है। मानव जाति आज भी गुलामी की जंजीरों में बंधी है। हालांकि हमारा देश आजाद है और मातृभूमि की सेवा और आजादी पाने में कई शहीदों को अपने प्राणों का बलिदान देना पड़ा है फिर भी आज की राजनीतिक परिस्थितियों के कारण कुछ लोग गुलामी सह रहे हैं। आर्थिक स्थिति से अस्तव्यस्त लोग रोजी-रोटी कमाने के लिए गुलामी की जंजीरों में फंस गए हैं। आजकल की परिस्थितियों में हंसते-खेलते और पढ़ने वाले छोटे बच्चों को भी परिवार के पालन पोषण में मजबूरन मदद का हाथ बनना पड़ रहा है। इस स्थिति में सुधार लाने के लिए सरकार ने चाहे कितनी भी योजनाएं कार्यान्वित की हों फिर भी बाल बधिकारों की रक्षा नहीं हो पा रही है। अगर नवजवानों की बात करें तो उनकी गुलामी की वजह एक तरफ उनकी खराब आर्थिक स्थिति और दूसरी तरफ बेरोजगारी है। कुछ नवजवान स्वरोजगार से अपनी परिस्थिति सुधार रहे हैं, और कुछ सरकारी और निजी क्षेत्रों में अपनी किस्मत आजमा रहे हैं और कुछ गुलामी में फंसे हुए अपना जीवन बिता रहे हैं। नौजवान हमारे देश की रीढ़ हैं, अगर वे कमजोर हैं तो देश का भविष्य अनदेखा बन सकता है। अंग्रेजों से हमारे देश की आजादी दिलाने में कई शहीदों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। भारत स्वतंत्रता संग्राम (1857-1947) में बहुत से आंदोलनकारियों ने जन्म लिया। 1857 के संग्राम (प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम) से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन तक भारत में अनेक सेनानियों ने बलिदान और योगदान दिया। अंग्रेजों के विरूद्ध, आंदोलन दो प्रकार का था। अहिंसक आंदोलन और सशस्त्र क्रांतिकारी आन्दोलन। भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन इतिहास का स्वर्ण युग है। महिला वर्ग की भी इन आन्दोलनों में मुख्य भूमिका रही थी। बहुत से संघर्षों के बाद देश आजाद हुआ लेकिन देश में दुश्मन, हिंसा, भ्रष्टाचार आपराधिक व्यवहार, अनैतिकता, अन्याय, हर क्षेत्र में राजनीतिक हस्तक्षेप और उसके नकारात्मक प्रभाव आदि से जनता की आजादी प्रभावित होती है।

अगर भारत के बाहर अन्य देशों में आजादी की बात करें तो, उत्तर कोरिया को उदारहण के तौर पर ले सकते हैं। वहां के सर्वोच्च नेता है "किम जांग-उन"। इनके अमानवीय व्यवहार के भय से पूरा उत्तर कोरिया कांपता है। वहां की आम जनता प्रतिबंधों के कारण दुःख में जीवन गुजार रही है। किम की बात न मानने पर लोगों को जेल में भेज दिया जाता है, उनके साथ इतना कठोर व्यवहार किया जाता है कि उनमें से कई कैदियों की मौत भी हो जाती है। इस देश के अलग ही रीति-रिवाज हैं जो तानाशाही शासन से चलते हैं। किम के शासन में जनता की आजादी की उम्मीदें असंभव हैं।

देश की आजादी के संदर्भ में महात्मा गांधी जी का कहना था, "भारत तब आजाद होगा जब महिलाएं आधी रात में भारत की सड़कों पर चलना सुरक्षित समझेंगी।" ये तब मुमकिन है जब देश के अंतर्गत शत्रुओं का निर्मूलन होगा।

उड़ते परिंदे आसमान में
आजादी की हवा आजमाते हैं।
कल क्या हो डरना क्यों,
पंख है छूले आसमान को।
डरना तो है एक बात से,
हाथ ना आए इन्सानों के।
हवा मिले जो मुफ्त में यहां,
सौदा होता है सांसों का।
आजादी की ये निशानी है,
अनजान है ये काली करतूतों से।
हिंसा जो बढ़े मानवता में,
जीवन बने दुर्भर हर प्राणी का।

आजादी, धरती पर हर प्राणी का हक है। नारा नहीं बल्कि इसका पालन करें, "जियो और जीने दो।"

जय हिंद!

– सीएच उदयश्री
डी.ई.ओ., हैदराबाद

कोरोना को हराना है

मिलकर कोरोना को हराना है।
बच्चे हो या बूढ़े सबको जागरूक बनाना है।
हाथ किसी से नहीं मिलाना है।
चेहरे पर हाथ नहीं लगाना है।
हर दो-दो घंटे में २० सेंकड तक हाथ को धोना है।
मिलकर कोरोना को हराना है।

बचाव ही इलाज है, यह आज हमें समझाता है
कोरोना से हमको नहीं घबराना है।
सावधानी रखकर कोरोना वायरस हराना है।
देश हित में सभी को यह कदम उठाना है।
मिलकर कोरोना को हराना है।

–सुभाष चन्द राणा
डी.ई.ओ., हाइड्रो पावर

लेख

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

परिचय

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैसा कि शब्द से ही पता चलता है, बुद्धिमत्ता को कृत्रिम रूप से बनाया जाता है ताकि मशीनों को बुद्धिमत्ता के प्रसंग में, मनुष्यों की तरह व्यवहार करने के लिए बनाया जा सके। मशीनों को यदि बुद्धिमत्ता के आदेशों के साथ प्रक्रिया में लाया जाता है, तो वे 100% परिणाम देते हैं, क्योंकि वे कुशल हैं। मानव मस्तिष्क उसी तरह की क्षमता के लिए सक्षम हो सकता है या संभव है कि नहीं भी हो सकता है क्योंकि यह उस दौरान मस्तिष्क के कार्य करने पर निर्भर करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता कंप्यूटर विज्ञान में हो रही प्रगति में से एक है, इसलिए इसे कंप्यूटर विज्ञान की ही एक शाखा के रूप में देखा जा सकता है। यह मशीनों की बुद्धिमत्ता है। आमतौर पर, हम इंसानों की बुद्धिमत्ता को ही समझते हैं, लेकिन जब इसी को मशीन द्वारा दर्शाया जाता है, तो उसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता कहा जाता है।

एक मशीन तभी कार्य करती है जब उसे निर्देश दिया जाता है लेकिन अगर उसी मशीन में मानव जैसी सोच और विश्लेषण, समस्या को सुलझाने की क्षमता, आवाज पहचानने की क्षमता आदि को स्थापित कर दिया जाए, तो वही इसे स्मार्ट साबित करता है। मानवीय बुद्धिमत्ता कुछ संसाधित निर्देशों के माध्यम से जुड़ा हुआ है। मशीनों के निर्देशों के रूप में कई संसाधित कमांड हैं ताकि वे मनचाहे परिणाम दे सकें।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रकार

मुख्य रूप से दो प्रकार की कृत्रिम बुद्धिमत्ता होती है, जो इस प्रकार से है :

श्रेणी-1

- **संकुचित कृत्रिम बुद्धिमत्ता :** ये सिर्फ एकल कार्य कर सकती है, उदाहरण - आवाज की पहचान करना।
- **सामान्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता :** इस तरह की बुद्धिमत्ता में मानव जैसे कार्यों को करने की क्षमता होती है। फिलहाल आज की तारीख तक, ऐसी कोई मशीन विकसित नहीं हुई है।
- **उत्कृष्ट कृत्रिम बुद्धिमत्ता :** एआई एक इंसान से बेहतर प्रदर्शन करने की क्षमता रखता है। हालांकि इस पर अभी भी शोध जारी है।

श्रेणी-2

- **प्रतिक्रियाशील मशीन :** यह मशीन किसी परिस्थिति के प्रति तेजी से प्रतिक्रिया करती है। यह वर्तमान या भविष्य के उपयोग के लिए किसी भी डेटा को स्टोर करने में सक्षम नहीं है। यह फीड किए गए डेटा के अनुसार काम करता है।

- **सीमित स्मरणशक्ति :** यह मशीन एक सीमित अवधि के लिए कम मात्रा में डेटा इक्कठा कर सकती है। इसके उदाहरण सेल्फ ड्राइविंग कार और वीडियो गेम हैं।

- **मन का सिद्धांत :** ये ऐसी मशीनें हैं जो मानवीय भावनाओं को समझती हैं, ये काफी ज्यादा समझदार होती हैं। हालांकि इस प्रकार की मशीनें अभी तक विकसित नहीं हुई हैं। इसलिए अवधारणा पूरी तरह से काल्पनिक है।

- **आत्म जागरूकता :** इस प्रकार की मशीनें इंसानों की तुलना में बेहतर काम करने का गुण रखती हैं। ये दूसरी बात है कि आज की तारीख तक, ऐसी कोई मशीन विकसित नहीं की गई है। हालांकि इस दिशा में लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमें अपने काम को आसान बनाने के लिए सहायता प्रदान करने में हमारी मदद कर रही है,

- यदि यह शिक्षा के साथ है, तो तेजी से सीखने के विभिन्न तरीकों के साथ ऊपर उठने में मदद करता है, बिना किसी गलती के अधिक मात्रा में डेटा संकलित करती है।

- चिकित्सा क्षेत्र में, यह विभिन्न तरह के निदान के लिए डेटा व्याख्या की सुविधा प्रदान करती है, किसी तरह के प्रयास की उम्मीद किये बिना यह विभिन्न रोगियों का विवरण प्राप्त करना, आगे चलकर किसी भी बीमारी से संबंधित प्रश्नों या रोगियों की काउंसलिंग के बारे में चर्चा के लिए एक सामान्य मंच साबित करने में मदद करती है। रूटीन चेकअप की निगरानी के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ अन्य कई उपकरण भी उपलब्ध हैं।

- यह दैनिक गतिविधियों में भी काफी उपयोगी है, आगे अनुसंधान और विकास क्षेत्र को बहुत मदद प्रदान करती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ताः मानव जाति के लिए खतरा

विकासशील तकनीक के रूप में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक वरदान साबित हो रही है। यह कार्यभार को कम करने के साथ-साथ इसे विशेष रूप से हल करके उक्त कार्य को और भी ज्यादा आसान बना सकती है। आधुनिक तकनीक का उपयोग करके एक व्यक्ति अपने कार्य में कई तरह के लाभ उठा सकता है। चूंकि इस दुनिया में हर चीज के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव हैं, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ भी कुछ ऐसा ही है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कई नकारात्मक प्रभाव भी होते हैं। यदि इस तकनीक का उपयोग नकारात्मक मानसिकता के साथ किया जाता है, तो यह कहना गलत नहीं होगा कि यह सम्पूर्ण मानव जाति को नष्ट भी कर देगा। किसी भी तकनीक को विकसित करने का मतलब यह कभी नहीं होता है कि हमें काम करना बंद कर देना चाहिए, वे केवल

हमारे काम को आसान बनाने के लिए हैं। लेकिन अगर हम इस बात को भूल जाते हैं तो हमारे हाथ निराशा के अलावा और कुछ भी नहीं लगेगा।

निष्कर्ष

इसमें कोई संदेह नहीं है कि तकनीकी उन्नति, मानव जाति के विकास में एक सहायक रणनीति साबित हो रही है। आज इंसान चांद पर बसने की योजना बना रहा है। जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता को उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता स्तर पर विकसित किया जाता है, तो उससे काफी अधिक तकनीकी सहायता मिलेगी। रोबोटिक्स जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता की एक विकासशील शाखा है, इसके उच्च योगदान हो सकते हैं। प्रशिक्षित रोबोट को परीक्षण और निगरानी गतिविधियों के लिए अलग-अलग नमूने प्राप्त करने के लिए अंतरिक्ष में भेजा जा सकता है। इसलिए कुल मिला जुला कर, यह कहा जा सकता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जाति को लाभान्वित करने की दिशा में है यदि उसका उपयोग उचित और सकारात्मक तरीके से किया जाए।

– ताज पाल
उप मुख्य अभियंता
ग्रामीण शहरी विकास प्रभाग

◆◆◆

हिंदी दिवस के अवसर पर कविता

विभिन्न भाषाएं, विभिन्न परिधान, विभिन्न बोली,
विभिन्न रहन-सहन पर एक हे हम सब।
हिंदु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सब यहां रहते बनके भाई-भाई।
दिवाली, दशहरा, ईद, क्रिसमस सब त्यौहार मनाते आपस में मिलकर।
हम भारत के बशींदे हे हंसी खुशी रहते है मिल-जुलकर।
विपदा आ जाये कभी तो सामना करते हे डटकर।
जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान से हरदम आगे बढ़ते हैं।

जय हिंद!

–कमलेश परमार
कनिष्ठ कम्प्यूटर प्रचालक
वाप्कोस, गांधी नगर कार्यालय

कहानी

कामांध जिन्न

गांव क्या एक छोटा पुरा था। जिसमें चालीस घर थे। सभी परिवार खेती और पशुपालन करते थे। इन चालीस घरों में शिक्षा का नितांत अभाव था। दूर-दूर तक कोई स्कूल नहीं था। यहां के सभी लोग भूत, प्रेत, जिन्न और टोने टोटके में पूरी तरह विश्वास रखते थे।

सांझ होने के बाद गांव में एक अजीब-सा सन्नाटा छा जाता था। कोई भी अपने घर से बाहर नहीं निकलता था। अंधेरा होने के बाद किसी भी घर में चूल्हा नहीं जलता था और न ही किसी घर में दीये की रोशनी दिखाई देती थी। महीने के कृष्ण पक्ष में यही स्थिति बरकरार रहती लेकिन शुक्ल पक्ष आते-आते सब कुछ सामान्य-सा हो जाता। दरअसल इस गांव पर एक जिन्न का आतंक पिछले तीन चार महीने से छाया हुआ है। जिन्न केवल अंधेरी रात में ही इस गांव में आता है। पूरे गांव में घूमता है। कोई गलती से उसके सामने आकर कुछ बोले तो उसकी खैर नहीं।

इसी गांव का नहनू एक दिन सांझ ढलने के बाद अपने खेतों से घर लौट रहा था। अंधेरा काफी बढ़ चुका था। गांव को जाने वाली पगडंडी में वह सरपट चला जा रहा था। पगडंडी के खत्म होते ही एक बड़ा दगरा आ जाता है जिसमें दोनों ओर पहाड़ से दिखने वाले सरकंडों के झुरमुट खड़े हैं। नहनू ने दगरे में आकर अपनी जेब से बीड़ी-माचिस निकाली और सुलगाने लगा। जैसे ही उसने तीली जलाई, सरकंडों से हों हों की बड़ी ही ड़रावनी आवाज आने लगी। नहनू डर के मारे चुपचाप खड़ा हो गया और आहट लेने लगा।

थोड़ी देर बाद ही नहनू ने देखा की सरकंडों के पीछे से एक काली-सी परछाई दगरे में आ खड़ी हुई। करीब छः हाथ लम्बी और स्याह काली दिखने वाली वो परछाई नहनू की तरफ बढ़ने लगी। अभी भी उसके मुंह से हों हों की डरावनी आवाज निकल रही थी। नहनू सहम गया, उसने हिम्मत कर पूछा कौन है?

परछाई ने कहा– “मुझे उजाले से सख्त नफरत है। तूने मेरे सामने उजाला क्यों किया?” कहते-कहते परछाई ने नजदीक आकर नहनू को अपने हाथों में उठा लिया और जोर-जोर से जमीन पर पटकने लगा। काफी देर तक यही सिलसिला चलता रहा। इसमें नहनू का एक हाथ और कुछ पसलियां टूट गईं। नहनू हाथ जोड़कर उससे जान बख्शने की भीख मांग रहा था। परछाई थोड़ी दूरी पर जा खड़ी हुई। अब भी उसके मुंह से हों हों की आवाज निकल रही थी। परछाई ऊपर से

नीचे तक बिलकुल नग्न थी। शरीर स्याह काला, उसने नहनू को चेतावनी दी – "मैं एक जिन्न हूं। मुझे उजाले से सख्त नफरत है। जो भी इस गांव में अपने घर में उजाला करेगा उसे मैं मार डालूंगा। जो भी मुझे रोकने की कोशिश करेगा उसे मैं जान से मार डालूंगा। कहते-कहते जिन्न सरकंडों के झुरमुटों में घुस गया। बेचारा नहनू डर से कांप रहा था। उसने अपने शरीर में हो रहे दर्द की परवाह नहीं की। अपनी जख्मी टांग को घसीटता हुआ गांव की ओर भाग लिया। गांव में जिसने भी नहनू का समाचार सुना उसके घर की तरफ दौड़ा चला आया।

गांव में एक सत्तर वर्षीय हरजी बाबा था जो झाड़-फूंक करता था। लोग कहते है कि उसके सिर पर भेरुजी आता है। हर दीवाली और दसहरे को उसके घर झाड़-फूंक करवाने वालों का तांता लग जाता था। बाबा को वहां बुलाया गया। उसने आते ही एक लोटे में पानी मंगवाया। अपनी उंगलिया उसने लोटे में डाली और कुछ बुदबुदाने लगा। लोटे से पानी लेकर उसने नहनू के ऊपर छिड़का, बाकी पानी को उसने नहनू के घर के दरवाजे पर छिड़क दिया। वहां खड़े सभी लोगों के चेहरे पर भय व्याप्त था। आखिर गांव के सरुप ने बाबा से पूछा – "बाबा यह क्या माजरा है?"

बाबा ने घर में चारों ओर नज़र दौड़ाई और कहने लगा – "नहनू आज तेरे सीधे दिन थे जो तू बच गया। जब तुझे जिन्न पटक रहा था मुझे तो तभी पता लग गया था। उसी वक्त भेरुजी को मैंने वहां भेज दिया था। तभी तेरी जान बची है। "कहकर बाबा थोड़ी देर के लिए मौन हो गया। सभी लोगों में सन्नाटा छा गया।

सरुप ने फिर पूछा। "बाबा आज तो यह घटना नहनू के साथ हुई है कल किसी और के साथ हो सकती है। इसका कोई इलाज तो होगा।"

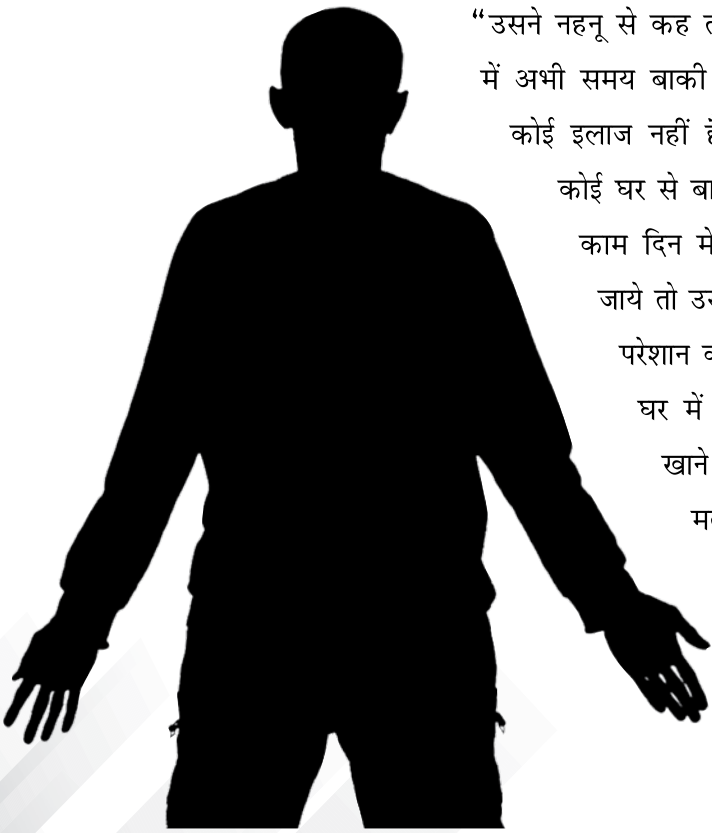

"उसने नहनू से कह तो दिया है कि उसे उजाले से नफरत है। इस जिन्न का इस योनि में अभी समय बाकी है। जब तक इसका समय पूरा नहीं हो जाता इसको भगाने का कोई इलाज नहीं है। अब सभी को थोड़ी सावधानी बरतनी होगी। अंधेरा होते ही कोई घर से बाहर न निकले। अपने घर में रात को दिया मत जलाओ। चूल्हे का काम दिन में ही कर लिया करो। यदि जिन्न से कभी तुम्हारा सामना भी हो जाये तो उससे बिना बात किये दूसरी जगह चले जाओ। जिन्न इंसान को तभी परेशान करता है जब उसकी बात न मानी जाये। वो यदि किसी रात तुम्हारे घर में भी घुस आये तो उससे बात मत करना। वो जो भी खाये उसे खाने दो। वो जो भी करे करने दो। उसे रोकने की कोशिश बिलकुल मत करना। फिर वो तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेगा।" हरजी बाबा ने सब को सावधान करते हुए कहा।

तीन-चार दिन तक गांव में कोई अनहोनी घटना नहीं हुई लेकिन गांव के लोगों के चेहरे पर भय और आतंक के भाव ज्यौं के त्यौं थे। लोगों ने बाबा के बताए अनुसार दिनचर्या बना ली।

साठ और सत्तर के दशक में गांवों में भूत-प्रेत या जिन्न के किस्से आम थे। लोगों में तरह-तरह की भ्रांतियां और अंधविश्वास की जड़े मजबूती से उनके दिमाग में बस गई थी। कई लोग तो यहां तक कहते थे कि यदि किसी भूत या जिन्न का दिल किसी औरत पर आ जाये तो वह आम इंसानों की तरह उसके साथ विषय-भोग करता है। इस बात को और मजबूत करते हुए कई लोग कहते थे कि फलां गांव में तो एक औरत के भूत के बच्चे भी पैदा हो गये थे। अशिक्षा और अंधविश्वास के साये में गांव वालों में इस प्रकार की धारणा और विश्वास आम बात थी। इस गांव में भी दिन भर इसी तरह की चर्चाएं जोरों पर रहती थीं।

भादों का महीना था। दिन में आज बारिश भी खूब हुई थी। जगह-जगह गांव में पानी भर गया था। घनघोर अंधेरी रात में झींगुर और मेंढकों की आवाज ने वातावरण को और भी डरावना बना रखा था। चारों ओर फैली स्याह काली रात ऐसी लग रही थी मानो निगल जायेगी। ऐसे में गांव के आखिरी छोर पर राजन्ती अपने कच्चे घर में किवाड़ बंद कर सोने की कोशिश कर रही थी। उसका पति धरमू आज भैंस लेने मेले में चला गया था। रात होने के कारण वो रास्ते में अपने एक रिश्तेदार के पास ही रुक गया था।

बादलों की कर्कश गड़गड़ाहट से राजन्ती का मन घबरा रहा था। वो अभी सोई भी नहीं थी कि उसे दूर कहीं से छप-छप की आवाजें आने लगी। उसने सोचा कोई कुत्ता या कोई जानवर रास्ते में भरे पानी में होकर जा रहा है। थोड़ी ही देर बाद उसके दरवाजे पर थप-थप की आवाज हुई। राजन्ती ने सोचा शायद मेले से उसका पति लौट आया है। खड़ी होकर उसने किवाड़ खोल दिए। देखा तो सामने स्याह काली, लम्बे कद की एक भयानक-सी दिखने वाली परछाई खड़ी थी। राजन्ती को समझते देर न लगी। यह तो जिन्न है। वो चुपचाप सहमी-सी खड़ी रही। जिन्न के मुंह से हों हों की आवाज आने लगी। डर के मारे राजन्ती थर-थर कांप रही थी। थोड़ी देर बाद जिन्न बोला- "दूध घी लाओ।"

राजन्ती बिना देर किये घर में रखी हुई दूध और घी की मथनी उठा लाई। जिन्न दोनों मथनियों से खाने लगा। खाने के बाद वो राजन्ती की तरफ बढ़ा। उसने दोनों हाथों से राजन्ती को बांहों में कसकर जकड़ लिया। राजन्ती डर के मारे बेहोश हो गई। काफी रात बीत जाने के बाद राजन्ती को होश आया। उसका सारा शरीर दर्द से फटा जा रहा था। उसका अंग-अंग दुख रहा था। राजन्ती समझ गई कि जिन्न ने उसके साथ दुष्कर्म किया है। रात भर वो सहमी-सी अपने घर में बैठी रही। आंखों से नींद कोसों दूर थी।

सुबह होते ही राजन्ती हरजी बाबा के पास गई। उसके कपडों में काले-काले निशान बन गए थे। बाबा के पास पहले से ही काफी भीड़ थी। राजन्ती ने जिन्न की अपने घर आने की बात बताई लेकिन उसके साथ किये गये दुष्कर्म की बात उसने लाजवश छिपा ली।

बाबा ने कहा - "तूने बहुत अच्छा किया राजन्ती जो जिन्न को दूध, घी खिला दिया और उसका विरोध नहीं किया, नहीं तो जाने क्या अनर्थ हो जाता। सभी इस बात को सुनकर दंग थे। जिन्न की दहशत और ज्यादा बढ़ गई। दो तीन दिन बाद एक बार फिर जिन्न की गांव के रास्तों में घूमने की आवाजें आ रही थीं।

उस दिन गांव का सरवण अपने घर में सो रहा था। अचानक उसकी नींद खुली। खड़ा होकर उसने देखा कि काला जिन्न उसके घर के आगे वाले रास्ते से गांव की ओर जा रहा था। उस दिन जिन्न किसी के घर में नहीं घुसा।

गांव के छोटे बड़े सभी के चेहरे पर जिन्न का डर स्पष्ट देखा जा सकता था। यदि किसी के चेहरे पर डर नहीं था तो वो केवल गांव में एक ही आदमी था बसन्ता।

बसन्ता अपने जमाने का नामी पहलवान रह चुका था। अच्छा खाना और कसरत करना शुरू से उसके शौक थे। पचास वर्ष की आयु में भी उसका शरीर किसी तीस वर्ष के जवान जैसा लगता था। बलिष्ठ भुजाएं, लम्बी कद काठी और रोबदार मूंछे उसके व्यक्तित्व को असाधारण बना देती थी। उसने कभी जिन्न की बातों पर विश्वास नहीं किया। वो लोगों से कहता था कि यह सब मन का वहम है। यदि सचमुच में जिन्न है भी तो कभी मुझे मिला तो उससे कुश्ती जरूर लडूंगा। मैं किसी भूत जिन्न से नहीं डरता। और वाकई वो डरता भी नहीं था। कई बार अंधेरा होने के बाद वो गांव में दो तीन चक्कर लगाकर आता था। बीच-बीच में लोगों से पूछता भी जाता था कि किसी के घर में यदि जिन्न आ गया हो तो मुझे बताओ। मैं उसी की तलाश में घूम रहा हूं। जब भी वो गांव में चक्कर लगाता था तो लोगों को ऐसा लगता था मानो ईश्वर ने उनकी प्राण रक्षा के लिये बसन्ता को भेजा है।

पिछले दो महीनों की अंधेरी रातों में जिन्न गांव की करीब आठ-दस महिलाओं का शील भंग कर चुका था। लाजवश किसी भी औरत ने इसकी चर्चा एक दूसरे से नहीं की। एक खास बात यह होती कि जिस भी औरत के साथ जिन्न संसर्ग करता उसके कपड़ों पर अजीब से काले धब्बे बन जाते थे।

उस दिन घनघोर काली अमावस्या की रात थी। सरवण और उसकी पत्नी लाली ने दिनभर खलिहान में अनाज बरसाया था। दोनों थके हुए थे। सरवण को बाहर बनी पौड़ी में जल्दी ही नींद आ गई। लाली अंदर घर में सो रही थी। अचानक सरवण की नींद खुल गई। उसने देखा कि काला जिन्न उसकी पौड़ी से निकलकर अंदर उसके घर में दाखिल हो रहा है। सरवण डर के मारे कांप रहा था मगर चुपचाप बिस्तर में ही सुबका रहा।

अंदर पहुंचकर जिन्न वही हों हों की डरावनी आवाज करने लगा। उससे लाली की नींद टूट गई। लाली हड़बड़ाकर उठी। डर से उसका सारा बदन कांप रहा था। इस सर्द रात में भी उसका शरीर पसीने से लथपथ हो गया। जिन्न ने जाते ही दूध और घी की अपनी पुरानी फरमाइश की। लाली ने तुरंत घर में रखे दूध और घी की मटकी लाकर उसके सामने रख दी और वह एक ओर खड़ी हो गई। खाने के बाद जिन्न ने वही किया जो वह बाकी औरतों के साथ करता आया था। जिन्न तेज-तेज कदमों से घर में से निकलकर पौड़ी में होकर बाहर जा रहा था। पौड़ी में बनी ओखली में उसका पैर फंस गया और जिन्न धड़ाम से नीचे गिरा। इस वाकिये को सरवण अधखुली आंखों से देख रहा था। उसे खटका हुआ। उसके दिमाग में हलचल हुई। जिन्न में तो दैवीय शक्तियां होती है वो एक साधारण ओखली में फसकर कैसे गिर सकता है। सरवण बिजली की फुर्ती से उठा और सिरहाने रखी लाठी को उठाया। न जाने उसमें उस समय वो बला की फुर्ती कहां से आ गई थी? उसने आव देखा न ताव, तड़ातड़ जिन्न की खोपड़ी पर लाठी से अनगिनत प्रहार कर डाले।

इस अप्रत्याशित हमले से बेखबर जिन्न संभल भी नहीं पाया और चारो खाने चित्त होकर बेहोश हो गया। लाली भी घर में से भागकर वहां आ गई। देखते ही लाली चीखने लगी - भागो, भागो। थोड़ी ही देर में आस-पड़ोस के लोग इकट्ठा हो गये। लाली एक मीठा तेल का दिया जलाकर ले आई। दिए की रोशनी में लोगों ने देखा कि जिन्न की खोपड़ी से खून की एक तेज धार निकल रही है। लोगों ने ध्यान से उसे देखा तो चेहरा कुछ जाना पहचाना-सा

लगा। सारे शरीर पर कालिख पुती हुई थी। लोगों ने बाल्टी भरकर उसके ऊपर पानी डाला। कालिख उतरने के बाद लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। सरवण के मुंह से निकला अरे, यह तो अपने ही गांव का बसन्ता है। पानी डालने से अब बसन्ता को धीरे-धीरे होश आ रहा था। उसका सिर चकरा रहा था और दर्द के कारण वह कराह रहा था। लोगों ने उसे उठाकर गांव के चोपाल पर लिटा दिया। जब उसे पूरी तरह होश आ गया तो लोगों ने फिर उसे पीटना शुरू कर दिया। उसे पीट-पीट कर अधमरा कर दिया। उस पिटाई में उसका एक हाथ और एक पैर भी टूट गया था। वो लोगों से अपनी जिंदगी की भीख मांग रहा था। बोलते-बोलते उसका गला सूखा जा रहा था। उसने हाथ जोड़कर पानी देने की मिन्नत की। किसी मनचले ने उसे पानी की जगह पिशाब पिला दिया।

थोड़ी देर बाद बसन्ता के दोनों बेटे भी वहां आ गये। उन्होंने लोगों से कहा कि इसने यह जो दुष्कर्म किया है इसकी सजा इसे जरूर मिलनी चाहिए लेकिन हम गांव वालों से विनती करते हैं कि तुम लोग इसकी मौत के जिम्मेदार मत बनो। इसे पुलिस के हवाले कर दो। वहीं इसे अपने किये की सजा मिलेगी। गांव के लोग कोर्ट कचहरी से बहुत डरते थे सो बसन्ता को सुबह पुलिस के हवाले कर देने पर राजी हो गये।

गांव के सरुप ने राय दी की पहले इससे पूरी बात तो पूछने दो। इस जुर्म में और कौन-कौन इसके साथ है? सबने इसका समर्थन किया और बसन्ता से कड़ाई से पूछने लगे।

बसन्ता कहने लगा- "मेरी पत्नी को मरे हुए सात साल हो गये सो दिमाग में गलत विचारों ने घर कर लिया था। मैं वासना के वशीभूत हो गया था। एक दिन मैंने इसकी चर्चा हरजी भगत से की तो उन्होंने ही मुझे यह रास्ता बताया। सारी योजना उसी की थी। तय यह हुआ था कि भय वश जब सब लोग रात को अपने खलिहानो में नहीं जायेंगे तो मैं अनाज की चोरी कर उसे बेच दूंगा। उसका आधा हिस्सा हरजी लेगा। किया भी वही मैं रोज तुम्हारे खलिहानो से अनाज चुराकर बेच देता था और उसका आधा हिस्सा हरजी को पहुंचा देता था। इसी भय की ओट में मैं अपनी वासना पूर्ति कर लेता था। गांव में हरजी ने ही लोगों में भय फैलाने में अहम भूमिका निभाई थी। मैं इसके इशारों पर ही काम कर रहा था। कहते-कहते बसन्ता फूट-फूट कर रोने लगा।

– विजय सिंह मीणा
निदेशक (रा.भा.)
जल शक्ति मंत्रालय

◆◆◆

हिन्दुस्तान की है शान हिन्दी,
हर हिन्दुस्तानी की है पहचान हिन्दी,
एकता की अनुपम परम्परा है हिन्दी,
हर दिल का अरमान है हिन्दी

हमारा चुनाव

ये चुनाव भी एक भ्रम ही है
हमें चुनाव की आजादी है या नहीं

क्या जन्म के लिए हमसे पूछा गया था
क्या होंगे हम हिन्दू या मुस्लिम,
होंगे पुरुष या स्त्री,
पंडित होंगे, ठाकुर या दलित,
जन्म लेने के लिए
ना पूछा हमसे कि किस देश में जाना है
या कौन से माँ बाप को अपना बनाना है
पढ़ने हैं मंत्र या
कुरान की अजान पे सिर झुकाना है

चुनते हम तो शायद धरती पर
एक ही धर्म होता सरहदों पे लकीरें न होती
एक ही पहचान होती हमारी
कि किसी की कोई पहचान नहीं,
आस्थाएं, विचार सब एक

आखिर एक ही तो हाता है चोट लगने पर दर्द
एक सा ही होता है माँ का प्यार
एक ही होता है प्यार में न्यौछावर हो जाना
एक ही होता है किसी के खो जाने का दुःख

चुनाव एक भ्रम ही है...
मनुष्य बनते ही चुनाव के नाम पर
थोप दिये जाते हैं
हम पर दूसरों के फैसले,
धर्म, जाति, देश, लिंग...
सब कुछ

मुंह में ठूस दिये जाते हैं नारे,
एक झुंड के पीछे चलने की मजबूरी,
ये नहीं तो वो, बस इतना ही,
ये पागलपन भी हमारा चुनाव तो नहीं,
ताली बजाने वाली तो ये कोई बात नहीं,
ये पागलपन तो बोया जाता है
जड़ों में हमारी

फिर भी
हमारा चुनाव हो सकता है
इस पागलपन को नकारना
इस नफरत से बचना

जन्म हमारा चुनाव न सही
जीवन तो है
धर्म हमारा चुनाव न सही
संवेदना तो है
जाति हमारा चुनाव न सही
मनुष्यता तो है
देश, राज्य हमने चाहे न चुना हो,
उससे प्यार करना, उसमें रच बस जाना
तो हमारे हाथ में है

हमारा यही चुनाव
हमारे जीवन का आधार है
और ये कोई भ्रम नहीं

-गुरनाम सिंह सोढ़ी
अपर मुख्य अभियंता
नदी विकास प्रभाग

अफगानिस्तान में भारतीय निवेश से बनी परियोजनाओं की स्वर्णिम गौरव गाथा

वर्ष 2001 के उपरांत, युद्धग्रस्त अफगानिस्तान में नकारात्मक शक्तियों के पत्तन के उपरांत सहयोगी एवं मित्र राष्ट्रों के सहयोगी हाथ अफगानिस्तान की प्रगति एवं मूलभूत उन्नत्ति के लिए आगे बढ़े। तदोपरांत, अफगानिस्तान सरकार के निवेदन पर भारत सरकार ने दोस्ती का हाथ बढ़ाते हुए, तकनीकी सहयोग के अंतर्गत विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन की योजना बनाई और विदेश मंत्रालय के सौजन्य से अफगानिस्तान के भारतीय दूतावास के द्वारा विभिन्न परियोजनाओं का खाका तैयार किया गया। इन योजनाओं के क्रियान्वयन का ज़िम्मा विभिन्न भारतीय संस्थाओं को दिया गया। जैसे, अफगान-इंडिया मैत्री (सलमा) बांध (हेरात), आमिर ग़ाज़ी बांध का जीर्णोद्धार (काबुल), करगा बांध का जीर्णोद्धार (काबुल), ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल के लिए नल कूप का निर्माण (2 भागों में: प्रथम भाग – हेरात प्रान्त के ग्रामों में, द्वितीय भाग – उत्तरी अफगानिस्तान के कुच्छ प्रांतों के चुने हुए गांवों में) यह सभी कार्य वाप्कोस को सौंपे गए। काबुल में हबीबिया स्कूल का पुनर्निर्माण, काबुल में इंदिरा गाँधी हॉस्पिटल का जीर्णोद्धार एवं तकनीकी सहायता, अफगान संसद भवन का निर्माण भारत के केंद्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा, ज़रंज – दिलाराम राजमार्ग का निर्माण सीमा सड़क संगठन द्वारा एवं अन्य महत्वपूर्ण लोक कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन। इन सभी परियोजनाओं की सफलता का वर्णन निम्न पंक्तियों में प्रस्तुत है।

1) अफगान-इंडिया फ्रेंडशिप (सलमा) डैम परियोजना, हेरात

104.30 मी. ऊँचे लगभग 550 मी. लम्बे तथा 640 एमसीएम जलाशय और 42 मे.वाट तथा 75000 हेक्टेयर की सिंचाई क्षमता वाले सलमा डैम का कार्य सफलतापूर्वक वाप्कोस के वर्षों की कड़ी मेहनत एवं अथक प्रयास एवं उपासना के फलस्वरूप 4 मई 2016 को माननीय प्रधानमंत्री जी के करकमलों द्वारा अफगानिस्तान की जनता को समर्पित किया गया। तत्पश्चात्, सलमा बांध अपने उद्देश्य को पिछले 5 वर्षों से पूरा कर रहा है।

उल्लेखनीय है कि यह वर्ष पश्चिमी अफगानिस्तान में सूखे का वर्ष है, सलमा बांध के विशाल जलाशय में पिछले साल का पानी जमा होने की वजह से पश्चिमी अफगानिस्तान को न केवल निर्बाध विद्युत आपूर्ति हो रही है बल्कि सिंचाई के लिए पानी भी लगातार मिल रहा है, यही है सलमा डैम का उद्देश्य।

आने वाले अनेक दशकों तक पश्चिमी अफगानिस्तान की जनता सलमा डैम से लाभान्वित होती रहेगी और **"जय हिन्द"** कहती रहेगी।

अफगान-इंडिया मैत्री डैम का लोकार्पण

2) अमीर ग़ाज़ी डैम (काबुल) का जीणीद्वार

18 मी. ऊंचाई और 70 मी. लम्बाई वाला 80 वर्ष पुराना अमीर ग़ाज़ी डैम काबुल से 40 कि.मी. पूर्व में खाकेजबबार ज़िले में स्थित है, इसके जीर्णोद्वार का कार्य वाप्कोस द्वारा 2006-2007 में किया गया।

इस योजना के अंतर्गत निम्न कार्य किये गए:

1)	2.0 लाख cum सिल्ट निकल के डैम के जलाशय में वृद्धि।

2)	डैम ऊंचाई 0.5 मी. से बढ़ा कर अतिरिक्त जलाशय क्षमता में वृद्धि की गयी।

3)	अतिरिक्त जल निकासी के लिए डैम में स्पिल चैनल का निर्माण।

4)	500 मी. सिचाई नहर का निर्माण।

5)	सिचाई जल की निकासी के लिए 2 सिफन पाइप्स लगाए गए।

6)	पूरे डैम का सम्पूर्ण जीर्णोद्वार।

7)	इक्विपमेंट फॉर मेंटेनैन्स

योजना के लाभ

(i)	2000 हेक्टेयर कृषि भूमि के लिए सिंचाई।

(ii)	डैम के नीचे स्थित बुतखाक जिले में जल आपूर्ति।

(iii)	डैम से निकले उर्वरक युक्त सिल्ट का आसपास के गावों के खेतों में फैला कर उर्वरक क्षमता में वृद्धि।

(iv)	योजना के क्रियान्वयन के दौरान सैंकड़ों स्थानीय अफगान जनता को साल भर रोज़गार मिला।

इस योजना से क्षेत्र की जनता अभी भी लाभान्वित हो रही है और आने वाले कई वर्षों तक होती रहेगी और **"जय हिन्द"** कहती रहेगी।

अमीर गाज़ी डैम का जीर्णोद्वार

3) करगा डैम (काबुल) का जीर्णोद्वार

लगभग 80 वर्ष पुराना डैम, जीर्ण शीर्ण हालत में था, जीर्णोद्वार का कार्य वाप्कोस द्वारा 2006-2007 में विषम परिस्थितियों में सफलतापूर्वक किया गया। यह डैम काबुल के 20 कि.मी. पश्चिम में स्थित है, 30 मी. ऊँचा व लगभग 450 मी. लम्बा है।

योजना के अंतर्गत निम्न कार्य किये गए:

1) डैम का पूर्ण जीर्णोद्वार, अतिरिक्त जल निकासी हेतु स्पिलवे का जीर्णोद्वार, जल आपूर्ति के लिए डैम इन्टेक के गेट का नवीनीकरण, डैम के जलाशय के समीप भार युक्त पत्थरों की पिचिंग

2) पगमांन नदी से करगा डैम जलाशय में अविरल जल आपूर्ति के लिए 8 कि.मी. फीडर कैनाल का निर्माण।

3) पगमांन नदी पर इन्टेक वीयर का निर्माण

4) करगा डैम से बादाम बाग तक 12 कि.मी. जल आपूर्ति नहर का निर्माण।

5) मैंटेनैंट एक्विमेंट ट्रांसफर

योजना के लाभ:

1) पश्चिमी काबुल की 2000 जनता को स्वच्छ जल आपूर्ति

2) 1500 हे. कृषियोग्य भूमि की सिंचाई

3) करगा डैम में पगमांन नदी पानी आने से इसका जलाशय बढ़ गया और यह काबुल का एक बड़ा पर्यटक स्थल बन गया, नौकायन शुरू हो गयी, सैलानियों में वृद्धि के कारण रोज़गार के अवसर कई गुना बढ़ गए।

4) मत्स्य पालन में कई गुना वृद्धि।

5) योजना के क्रियान्वयन एवं तदोपरांत रोज़गार के अवसर बढ़े।

अमीर ग़ाज़ी एवं करगा डैम का लोकार्पण अफगानिस्तान में भारत के तत्कालीन राजदूत श्री राकेश सूद और अफगान सरकार के एक उपमंत्री ने 8 जनवरी 2008 को करगा डैम पर किया। यह योजना अभी भी सफलतापूर्वक जनता को लाभान्वित कर रही है और आने वाले वर्षों तक करती रहेगी और क्षेत्र की जनता लम्बे समय तक **"जय हिन्द"** कहती रहेगी।

करगा डैम का जीर्णोद्वार

4) नलकूप योजना भाग-1-हेरात प्रान्त के गावों में

भारत सरकार की इस योजना को वाप्कोस द्वारा वर्ष 2006 में क्रियान्वित किया गया। भारत सरकार की इस योजना को वाप्कोस द्वारा वर्ष 2006 में पूरा किया गया।

योजना के अंतर्गत हेरात प्रान्त के विभिन्न ग्रामीण में क्षेत्रों में जल आपूर्ति के लिए भारत से आयातित नल कूप लगाए गए। इनमें, हेरात उपनगर, गुलमीर, गुज़ारा, गुलरन, राबतसंगी, चरबुर्ज, पाश्तोजारघन, जुबरैल, इंजील आदि ग्राम क्षेत्र प्रमुख थे। यह योजना अत्यंत जन कल्याणकारी रही। प्राप्त जानकारी के अनुसार, सभी नल कूप अभी भी काम कर रहे हैं जो पहले डीजल से चलते थे, सलमा डैम से बिजली आने पर अब बिजली से चलते हैं।

5) नलकूप योजना भाग-2-उत्तरी अफगानिस्तान

भारत सरकार की यह महत्वपूर्ण योजना भी वाप्कोस द्वारा धरातल पे विषम परिस्थितियों में क्रियान्वित की गयी। यह योजना, अफगानिस्तान के उत्तरी प्रांतों के चुनिंदा ग्राम में मज़ारे शरीफ के वंडिज्य दूतावास की मदद से वर्ष 2007 में पूरी की गयी। बागलन, समांगन, बल्ख (मज़ारे शरीफ), शिबिर्घन, एवं फरयाब प्रांतों के ग्रामों में जल आपूर्ति के लिए नल कूप लगाए गए।

यह सभी नल कूप अभी भी सफलतापूर्वक अपना उद्देश्य निभा रहे हैं, क्षेत्र की अफगान जनता **"जय हिन्द"** कह रही है।

नलकूप योजना का लोकार्पण

6) लालंदर (शहतूत) बांध परियोजना, काबुल

काबुल से लगभग 25 कि.मी. दक्षिण में मैदान नदी पर प्रस्तावित है। इसका उद्देश्य मुख्य रूप से काबुल के 2.0 लाख की जनता को पेयजल आपूर्ति, 1700 हे. जमीन की सिंचाई व 3 मे.वाट विद्युत उत्पादन है।

योजना के 2 भाग हैं, प्रथम भाग- अन्वेषण एवं विस्तृत प्रोजेक्ट रिपोर्ट, द्वितीय भाग - योजना का धरती पर क्रियान्वयन।

प्रथम भाग के अंतर्गत वाप्कोस द्वारा किये गए कार्य:

1) विस्तृत भू सर्वेक्षण

2) भू-तकनीकी अन्वेषण

3) ऐक्सक्वतिओं ऑफ 30 मी. ड्रिफ्टस हेर अबुत्मेन्त में।

प्रथम भाग का कार्य वाप्कोस द्वारा कार्य स्थल पर लेखक की अगवाई में रिकॉर्ड समय में पूरा किया गया। कार्य करते समय असमय मौसम की बेरहमी के साथ वाप्कोस दल को मौखिक एवं पात्र द्वारा जान से मारने की अनेक धमकियाँ दी गयीं। फिर भी भारतीय टीम के इरादे नहीं डगे और काम को समय से पूर्व अत्यंत निष्ठा से पूरा किया।

लेखक द्वारा अफगानिस्तान में, वाप्कोस की ओर से, ऊपर व्याखित सभी योजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा करने में उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए अफगानिस्तान सरकार ने विशेष रूप से विधिवत सम्मानित किया।

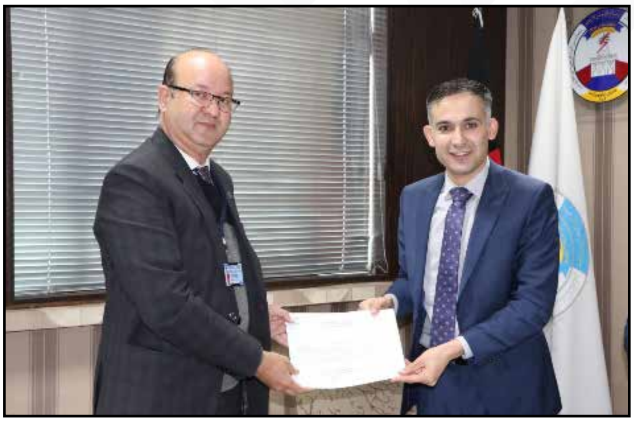

अफगानिस्तान सरकार की ओर से लेखक को विधिवत सम्मानित करते हुए: अफगानिस्तान के जल मंत्री एवं काबुल प्रान्त के राज्यपाल

भारत सरकार की योजनाओं को वाप्कोस ने धरातल पर अत्यंत ही विषम एवं कठिन परिस्थितियों में सफलतापूर्वक लोकार्पित किया और अफगानिस्तान में चहों ओर "जय हिन्द" का नारा बुलंद हुआ।

इन सभी योजनाओं के क्रियान्वयन में वाप्कोस के निदेशक (वा. व मा.सं.वि.), श्री अनुपम मिश्रा जी का योगदान अति महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय रहा, इन्होंने अफगानिस्तान में कदम तब रखा जब वहां जंग की निशानियां हर तरफ बिखरी हुई थी, कोई भी वाप्कोस इंजीनियर वहां जाने को राज़ी नहीं था। यह साहसिक कदम श्री अनुपम मिश्रा ने उठाया, काबुल से हेरात वाया कंधार सभी प्रकार के खतरों से भरपूर सड़क मार्ग से गए और सलमा डैम की साइट पर सबसे पहले तम्बू में रहकर काम शुरू किया। कई वर्षों तक लगातार अथक प्रयास कर, ऊपर रेखांकित सभी परियोजनाओं का सफलतापूर्वक निष्पादन होने में अति महत्वपूर्ण और अति उल्लेखनीय कार्य किया।

7) ज़रंज - दिलाराम राजमार्ग, निम्रोज़ प्रान्त

भारत सरकार की सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण योजना को वास्तविक धरातल पर क्रियान्वित करने का साहसिक कार्य भारत सरकार के सीमा सड़क संगठन द्वारा किया गया।

215 कि.मी. राजमार्ग, ज़रंज (नीमरोज़ प्रान्त) से दिलाराम (फाराह प्रान्त) तक सीमा सड़क संगठन ने अत्यंत विषम, कठिन एवं चुनौती पूर्ण परिस्थितियों में वर्ष 2006-2009 में किया गया।

इस परियोजना के क्रियान्वयन के समय जो नहीं होना था वह भी हो गया, अनगिनत रॉकेट बरसे, बम फेंके गए, आत्मघाती हमले हुए। जैसे-जैसे कार्य प्रगति करता गया, हमले भी बढ़ते गए भारी मात्रा में रक्तपात हुआ। लगभग हर 2 कि.मी. के निर्माण में एक बेगुनाह जान गयी। सीमा सड़क संगठन ने लगभग 130 कर्मचारियों (भारतीय एवं अफगानी) को खोया, फिर भी नहीं डरे। भारतीय अभियंताओं एवं कर्मचारियों के दम और बुलंद इरादे, और पूरी योजना को समय से पहले 23 जनवरी 2009 को 'जराज-दिलाराम राजमार्ग' लोकार्पित हो गया।

इस राजमार्ग के बनने से लाभ :

1) 215 कि.मी. दूरी जो पहले 12-14 घंटे में होती थी, 2 घंटे में पूरी होने लगी।

2) अफगानिस्तान सरकार की कल्याणकारी योजनाएं इस राजमार्ग के माध्यम से दूरदराज़ के गांवों में पहुँचने लगीं।

3) योजना के क्रियान्वयन के समय एवं बाद में स्थानीय जनता को अपर रोज़गार मिला और मिल रहा है और हमेशा जारी रहेगा।

4) चाबहार बंदरगाह (ईरान) से ज़रंज-दिलाराम के रस्ते काबुल की दूरी 1000 कि.मी. हो गयी। जबकि बंदर अब्बास (ईरान) से काबुल वाया हेरात की दूरी 2000 कि.मी. है। पूरे 1000 कि.मी. की बचत हो गयी।

5) चाबहार बंदरगाह (ईरान) इस राजमार्ग के माध्यम से मध्य एशिया सीधा जुड़ गया। पूरी दुनिया के लिए और विशेषकर भारत के लिए भी अफगानिस्तान एवं मध्य एशिया से सीधा एवं सरल संपर्क स्थापित हो गया।

इस परियोजना का फल सदैव ही अफगानिस्तान की जनता और सरकार को हमेशा मिलता रहेगा चाहे वहां सत्ता में कोई भी रहे। और लाभान्वित होने वाली जनता सदैव ही “जय हिन्द” का उद्घोष करती रहेगी।

ज़रंज-दिलाराम राजमार्ग का लोकार्पण

8) हबीबिया स्कूल (काबुल) का जीर्णोद्वार

काबुल स्थित पुराने हबीबिया स्कूल जीर्णोद्वार का महत्वपूर्ण कार्य भारत के केंद्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा वर्ष 2005-2007 के मध्य सफलतापूर्वक किया गया। जीर्ण शीर्ण हबीबिया स्कूल केंद्रीय लोक निर्माण विभाग ने एक दम काया पलट कर दिया। स्कूल के काम आने वाले तमाम उपयोगी सामान एवं सभी तरह के आधुनिक उपकरण भारत सरकार ने प्रदान किये। स्कूल में नए सिरे से पाठ्यक्रम शरू किया गया। विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए न केवल आधुनिक विद्यालय मिला बल्कि अफगानिस्तान की शिक्षा प्रणाली को एक नया जीवन दान भी मिला।

हबीबिया स्कूल

नया विद्यालय बन गया, समाज में शिक्षा की नई ज्योत जल गयी। शिक्षित समाज किसी भी देश की उन्नति की गारंटी होता है। शिक्षा की यह ज्योत हमेशा जलती रहेगी, लाभान्वित होने वाले विद्यार्थी **"जय हिन्द"** का उद्घोष सदैव करते रहेंगे।

9) अफगान संसद भवन (काबुल) का निर्माण

अफगान संसद भवन, अफगान नागरिकों के लिए भारतीय नागरिकों की ओर से, शुद्ध भारतीय तकनीक से निर्मित एक अत्यंत महत्वपूर्ण तोहफा है।

अफगान संसद भवन का निर्माण भारत सरकार की ओर से केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग ने किया। काम के नाम पर चारों ओर से अनगिनत मुसीबतों का सामना करना पड़ा, आतंकी सगठनों ने अनेक रॉकेट बरसाए, बम फेंके गए, कार्य स्थल के आसपास आत्मघाती हमले हुए। जो नहीं होना था वह भी हुआ, क्योंकि मामला देश की संसद भवन के निर्माण का था, हर मंत्री, उप मंत्री, संसद, एवं अधिकारीगण सब एक से बढ़ कर एक, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के बॉस बन गए। सभी अपना अपना निर्देश देते थे। यानि, हमारे भारतीय इंजीनियर का नाक में दम वो भी रोज़- रोज़। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के सम्बंधित इंजीनियर और दूतावास के अधिकारी की यदाकदा पेशी होने लगी वह भी बहुत छोटी बात को लेकर; खिड़की-दरवाज़े ऐसे नहीं वैसे, फर्श-दीवारों के टाइल का रंग ऐसा नहीं वैसा हो आदि।

अंतत:, भारतीय इंजीनियर की रात दिन की कड़ी मेहनत और कठिन तपस्या सफल हुई, भव्य संसद भवन बना कर तैयार कर दिया जिसका लोकार्पण 25 दिसंबर 2015 में माननीय प्रधानमंत्री जी के करकमलों द्वारा किया गया। यह भवन अफगानिस्तान का अब तक का सबसे बड़ा एवं भव्य भवन है। अफगानिस्तान की जनता इस संसद भवन से, रहती दुनिया तक, हमेशा लाभान्वित होती रहेगी और **"जय हिन्द"** कहती रहेगी, चाहे सरकार कोई भी हो।

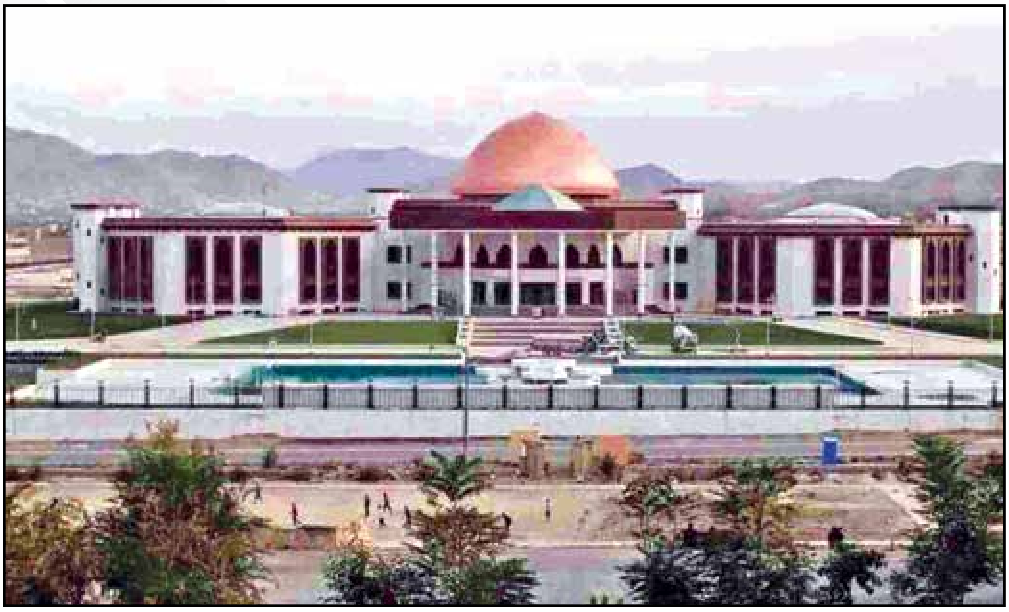

भव्य अफगान संसद भवन

10) अन्य अत्यंत महत्वपूर्ण योजनाएं

भारत सरकार की अफगानिस्तान में अन्य महत्वपूर्ण योजनाओं में, वर्ष 2009 में पावर ग्रिड द्वारा काबुल शहर को विद्युत आपूर्ति के लिए 220 के.वी. विद्युत ट्रांसमिशन लाइन्स, पुलेखोमरी से काबुल तक एवं चिमटाला (काबुल) तक एवं चिमटाला में 220 के.वी. विद्युत सबस्टेशन का निर्माण तथा 2007 में वाप्कोस द्वारा अंदखोयी से मेमना शहर (फरयाब प्रान्त) तक 110 के.वी. ट्रांसमिशन लाइन व विद्युत सबस्टेशन का निर्माण कर काबुल के साथ साथ दूरदराज़ के फरयाब प्रान्त में भी भारत सरकार ने बिजली पहुंचाई, काबुल के साथ-साथ फरयाब प्रान्त की जनता को भी अँधेरे में नहीं रहने दिया। लाभान्वित होने वाली अफगान जनता **"जय हिन्द"** कहती रहेगी।

भारत सरकार द्वारा अफगानिस्तान की विभिन्न संस्थाओं का प्रशिक्षण एवं सशक्तिकरण किया गया जो हमेशा अफगान जनता के काम आएगा और इसे कोई नहीं छीन सकता।

सड़क, पानी, बिजली एवं शिक्षा - ज्ञान जीवन की मूलभूत आवश्यकता है जो किसी भी देश की उन्नति की गारंटी है। भारत सरकार की सटीक एवं कारगर विदेश नीति के परिणामस्वरूप, भारत सरकार के निवेश से, भारतीय कंपनियों द्वारा अफगानिस्तान की धरती पर विषम एवं कठिन परिस्थितियों में धरातल पर उतारी गयी सभी परियोजनाएं आने वाले दशकों तक अफगानिस्तान की जनता को लाभान्वित करती रहेगीं।

ऊपर उल्लेखित सभी परियोजनाओं में काबुल में भारतीय दूतावास एंड विदेश मंत्रालय के अधिकारीगण का धैर्य एवं कदम-कदम पर सहयोग अति महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय था, इसके बिना यह कार्य कदाचित संभव नहीं था।

– एफ. आर. शेरवानी
मुख्य अभियंता
जल प्रबंधन प्रभाग

मैं कुर्सी हूँ

(उक्त रचना स्वरचित है)

मैं कुर्सी हूँ
हाँ मैं वही कुर्सी हूँ
जिस पर बैठने के लिए,
जिसे पाने के लिए
तुम सब लड़ते-झगड़ते थे
पर आज.....
आज मैं इतनी उपेक्षित हो गई हूँ
कि
मुझ पर बैठना तो दूर,
तुम मुझे देखना भी नहीं चाहते
क्योंकि
समय के साथ-साथ
मैं बूढ़ी, कमजोर और लाचार जो हो गई हूँ
जगह-जगह से मेरा रंग, फीका जो पड़ गया है
अब तो तुम बस.....
उस नई चमचमाती कुर्सी के साथ ही,
अपना समय बिताते हो
तुम्हारा सारा प्यार, सारी महत्वकांक्षाएं
अब, सिर्फ उस नई कुर्सी के साथ ही है
लेकिन याद रहे
एक दिन जब वो भी कमजोर,
पुरानी और बदरंग होगी
तब तुम्हारा सारा स्नेह
सारा लगाव
फिर से,
एक नई चमचमाती कुर्सी के साथ होगा

-संगीता झा
प्रबंधक (का.एवं प्रशा.)
हाइड्रो पावर

छूना है आसमान

सागर की इक बूंद है,
चंचल, अंजान, झलझलाती सी,
लहराते पानी का अंश,
रोशनी में झिलमिलाती सी,
पर चल पड़ी लहरों के संग अब,
बस यही सपना लिए,
कि चाहे एक पल को,
बस छूना है आसमान को

चलते कदम, न तो भ्रम,
चल पड़े उस राह पर हम,
नभ की ऊंचाई पर ही,
रखना है अंतिम कदम,
न कल रूके, न पल रूके,
सफलता के परचम के लिए,
चाहे एक पल को,
बस छूना है आसमान को।

अब करना है इक त्याग,
उस स्नेह, उस सहारे का,
अपने ही बल पर चलना है,
छोड़ना है साथ किनारे का,
इक आस है, प्रयास है,
अपने पर विश्वास है,
अब बस यही प्रयास है,
चाहे एक पल को,
बस छूना है आसमान को।

-विमल किशोर
प्रारूपकार
जल संसाधन प्रभाग

लेख

एक नजर राहुघाट जल-विद्युत परियोजना (2×20 मेगावाट)

वर्तमान में जल विद्युत प्रभाग द्वारा अनेक परियोजनाओं पर काम किया जा रहा है, जिनमें से राहुघाट जल-विद्युत परियोजना भी प्रमुख है। इस परियोजना से संबंधित मुख्य जानकारी हमने आप के लिए उपलब्ध करवाने की कोशिश की है।

राहुघाट जल विद्युत परियोजना म्यागदी तहसील, पश्चिम क्षेत्र नेपाल में स्थित है। इस परियोजना के सभी प्रमुख अवयव राहुघाट खोला के बाएं किनारे पर स्थित हैं। राहुघाट कलीगण्डकी नदी की एक बड़ी सहायक नदी है, जो कि पश्चिम से पूरब की तरफ बहती हुई कलीगण्डकी नदी को गलेश्वर में मिलती है।

इसका डिजाइन इस प्रकार किया गया है कि, निर्वाहन को एक 6.270 किलोमीटर सुरंग द्वारा मोड़ा जाएगा, जिससे 40 मेगावाट बिजली का उत्पादन बिजलीघर में होगा, जो कि कलीगण्डकी नदी के दायें में स्थित है।

इस परियोजना में 16.67 मीटर क्यूब पानी को एक ठोस बांध द्वारा मोड़ा जाएगा जो कि नदी के स्तर से 15 मीटर ऊंचा होगा। मोड़ा गया पानी गाद निष्कासन कक्ष में आयेगा जो, कि 90 मीटर लंबा एवं 15 मीटर गहरा होगा। जिससे पानी में आई हुई मिट्टी के 0.2 मी.मी. के कणों को टरबाइन तक जाने से रोका जाएगा। गाद निस्कासक कक्ष से ये पानी 3.3 मीटर व्यास की कंक्रीट सुरंग में आयेगा जो की 6.270 किलोमीटर लंबी होगी।

यह 3.3 मीटर व्यास की सुरंग एक 10 मीटर व्यास की लहर शाफ्ट में मिलेगी और वहां से दबाव सुरंग निकलेगी जिसके सभी ओर स्टील की परत होगी। यह स्टील की सुरंग 1.0 किलोमीटर व 2.25 मीटर व्यास की होगी जो, कि बिजली घर के 50 मीटर पहले 2.15 मीटर में बंट जाएगी।

इस परियोजना में 20 मेगावाट की दो पेलटन टरबाइन है, जो कि 57 मीटर लंबी, 25 मीटर चौड़ी एवं 30 मीटर गहरे सतह बिजलीघर में लगाई जायेगी।

यह बिजलीघर 69 मीटर लंबे एवं 62 मीटर चौड़े स्विचयर्ड से जुड़ा होगा, जिससे उत्पादित बिजली को पास के ग्रिड में भेजा जाएगा।

वर्तमान में ये परियोजना निर्माण में है। वाप्कोस इस परियोजना में प्रमुख सलाहकार है। इस परियोजना का नियोक्ता नेपाल बिजली प्राधिकारी है और विद्युत यांत्रिक कार्यों के ठेकेदार बी.एच.ई.एल. (BHEL) है।

– संगीता झा
प्रबंधक (का. एवं प्रशा.)
एवं
– गुरदीप सिंह
अभियंता, जल विद्युत विभाग

जाति जल की

कब होती है यहाँ प्यार की तलब
कब होती है यहाँ इच्छाओं की ललक
बुझाती है सिर्फ, जल की धारा
हो कोई भी जाति जल की।

कब होता है यहाँ श्वास पर संदेहः
कब होती है यहाँ दुविधा मन की
बुझाती है सिर्फ बौछार जल की
हो कोई भी जाति जल की।

कब होता है यहाँ पूर्ण जीवन का उद्देशः
कब होता है यहाँ पूर्ण जीवन का लक्ष्य
बुझाती है जो सिर्फ ज्ञान की धारा
हो कोई भी जाति जल की।

कब होती है यहाँ गुत्थी विचारों की
कब होती है यहाँ उलझन अंधकारों की
बुझाती है सिर्फ भोर अगले दिन की
हो कोई भी जाति जल की।

कब होती है यहाँ खोने की चिंता
कब होता है यहाँ पाने का डर
बुझाती है सिर्फ वर्षा जल की
हो कोई भी जाति जल की।

-चक्षु राजा
कनि. सहायक
वित्त प्रभाग

परिवेश गीत (जल)

जल ही हमारा जीवन
जल ही सबसे बड़ा धन
न करो इनसे मनमानी
न करो इनसे छेड़खानी
समझो इनका प्रयोजन।

शुद्ध रहे सदा तन-मन
हरा-भरा रहे सबका जीवन
प्यासों को पिलाओ शुद्ध पानी
पानी ही जीव की जिंदगानी
बंधु न करो इस जल को प्रदूषित।।

आओ सुनाएं विचित्र कहानी
जल में बसे धरती फिर भी न मिले पानी।।

बरसाओ पानी सृजो तरुवन
बचाओ हरियाली करो वृक्षारोपण
सुखी रहे ये सारा संसार
ये धरती है ईश्वर का दरबार
पानी बचाकर खुश रखो
विश्व का अमन।।

-तपन कुमार चक्रवर्ती
सर्वे अधिकारी ग्रेड-I
जल संसाधान प्रभाग

मां..... तुझे तो सब पता है.....

तुझे तो सब पता है, फिर मुझसे क्यों पूछ रही हो
कि ''मैं कल क्यों रोया'',
मेरे अंग-अंग में कतरा-कतरा बह रहा है तेरा ही रूधिर,
मेरी रग-रग में चल रही है तेरी ही सांसें,
फिर मुझसे क्यों पूछ रही हो
कि ''मैं कल क्यों रोया'',
मेरी धड़कन की हर लय जुड़ी है तेरे दिल से
मेरी सरगम के हर तान जुड़े हैं तेरी ही हर इक एहसास से,
फिर मुझसे क्यों पूछ रही हो
कि ''मैं कल क्यों रोया'',
तू नहीं तो लगता है मैं नहीं, मेरा कोई वजूद नहीं,
तूझसे मैं हूं मेरी मां, मुझसे तू नहीं,
तू तो इतनी करीब है मुझसे जितनी कि मैं नहीं मुझसे,
फिर मुझसे क्यों पूछ रही हो
कि ''मैं कल क्यों रोया'',
मारे ख़ुशी फूले नहीं समाती, जब कहते हैं लोग,
कि मैं तेरी परछाई हूं, और हूं भी ना क्यूं!
मेरी छवि भी तो दिया तेरा ही है,
कभी-कभी तो मेरे दिल में क्या चल रहा
यह मुझे नहीं तूझे पता होता है,
मेरी कदमों की आहटें ही तूझे बता देती कि मैं हूं,
फिर मुझसे क्यों पूछ रही हो
कि ''मैं कल क्यों रोया'',
तेरे आंचल तले सोकर,
पा लिए मैंने जीवन के सारे सुख,
तेरी ममता ने भुला दिए मेरे सारे गम,
चाहिए ना कुछ मुझे सिवा तेरे,
तू ही सबकुछ है मेरी ऐ मेरी हमदम,
कहते हैं कि दिन-रात के पहर में, साये भी छोड़ देते हैं हमें,
लेकिन तू तो रहती हरपल-हर क्षण मेरे संग,
फिर मुझसे क्यों पूछ रही हो
कि ''मैं कल क्यों रोया'',
पूछो तुम खुद से मिल जायेगा तूझे तेरा जवाब,
कहूं क्या तूझसे..................................
बस इतना समझ लो कि तू है तो मेरा अस्तित्व है,
तू नहीं तो कुछ भी नहीं।

—पूजा कुमारी
डी.ई.ओ.,
अवस्थापना प्रभाग

हिन्दी हमारी मातृभाषा है

हिन्द के हम वासी हैं,
हिन्दी हमारी मातृभाषा है.....।।
जन-जन के हृदय की आवाज है,
हर एक-दूजे को एक-दूजे से
जोड़े रखने की साज है,
सरल है, सुगम है,
मधुर है, मोहक है,
गुणवत्ता की ये खान है,
ये हमारी भाषा ही नहीं ये हमारा मान,
हमारा सम्मान, हमारी शान है.....।
हिन्द के हम वासी हैं,
हिन्दी हमारी मातृभाषा है.....
आओ हम अपनी मातृभाषा का विस्तार करें,
जन-जन में ऐलान करें,
हिन्द-हिन्दी हमारा सिरताज है,
हमारी माँ का दिया आशीर्वाद है,
सहजता से पिरो कर प्रेम से कह देने का
हमारे मन का मधुर गान है,
शुद्धता की प्रतीक है,
सौम्यता की पहचान है.....।
हिन्द के हम वासी हैं,
हिन्दी हमारी मातृभाषा है.....।।

-पूजा कुमारी
डी.ई.ओ.,
अवस्थापना प्रभाग

"गणपति आरती"

गजानन, गजकर्ण, महोदर
प्रथम पूज्य हे परमेश्वर
विकट, महोत्कट, कपिल, सुमुख हो
वक्रतुण्ड हे मयूरेश्वर।

धूमकेतू तुम गणाध्यक्ष हो
एकदंत तुम लंबोदर
बुद्धि सिद्धि समृद्धि के दाता
कृपा करो हम पर ईश्वर।

डमरू से जो वेद सीखते
पैंजन से सीखें संगीत
तांडव देख कर नृत्यनिपुण हों
गुणिन रचें युद्ध की रीत।

काम, क्रोध से मुक्ति दिलायें
रौग द्वेष सब दुख दूर भगायें
अहम लोभ कभी पास ना आयें
हाथ जोड़ सब आस लगायें।

धूमकेतु जय जय गणेश
भालचन्द्र जय जय प्रथमेष
शूर्पकर्ण जय वरद विनायक
शिव गौरी सुत जय विघ्नेष।

-डॉ. उदय रोमन
परियोजना प्रबंधक,
वाप्कोस लिमिटेड,
भोपाल

हम वाप्कोस अभिमान है

हम वाप्कोस, प्रणाम है, हम वाप्कोस, सम्मान है,
हम वाप्कोस, प्रणाम है, हम वाप्कोस, सम्मान है,
अपनी उज्ज्वल पहचान लिये हम वाप्कोस अभिमान है,
हम वाप्कोस, प्रणाम है, हम वाप्कोस, सम्मान है,

लहरों पर बूंद ने जन्म लिया,
संकल्प लिया कुछ करने का
कुछ ऐसे पंच-दशक पूर्व
आगाज हुआ दम भरने का
आकार-अनुभव की मंशा को
ज्ञान-ज्योति से भरना था
स्वरूप मिले, प्रारूप मिले,
कच्ची मिट्टी को संवारना था
इक जोश चला, उद्घोष चला,
फिर दूर कहीं से गूंज उठी.....
हम वाप्कोस, प्रणाम है, हम वाप्कोस, सम्मान है,
अपनी निष्ठा का नाम लिए हम वाप्कोस अभिमान है,

जल और विद्युत की परियोजना
विकास की प्रथम सीढ़ी है
जल और विद्युत की आशा को
हमने जो सफल साकार किया
स्वदेश में नहर परियोजना से
कृषि में अहम सहयोग दिया
विदेश में जल संसाधन का
हमने जो सुगम संचार किया
इक हवा चली, संघर्ष चला,
फिर दूर कहीं से गूंज उठी.....
हम वाप्कोस, प्रणाम है, हम वाप्कोस, सम्मान है,
अपने सफल अंजाम लिए हम वाप्कोस अभिमान है,
हम वाप्कोस, प्रणाम है, हम वाप्कोस, सम्मान है,

अपने सफल संचालन का
हर देश में डंका बजता है
अफगानिस्तान से मित्रता
सलमा पे तिरंगा सजता है
भूटान, नेपाल से फिजी तक
भारत का परचम लहराया
जिम्बाब्वे से केन्या तक
हर ओर तिरंगा फहराया
इक मौज चली, आदर्श चला
फिर दूर कहीं से गूंज उठी.....
हम वाप्कोस, प्रणाम है, हम वाप्कोस, सम्मान है,
भारत माता का नाम लिए हम वाप्कोस अभिमान है,
हम वाप्कोस, प्रणाम है, हम वाप्कोस, सम्मान है,

उस बूंद का साहस ही था
जिस बूंद का मोती बना
फर्श से फिर अर्श तक
प्रगति पथ पढ़ता चला
हर एक मुश्किल से जूझता-गिरता-संभलता
हर एक रस्ते से जुड़ा और कारवां बढ़ता गया
आशा से भरी हुई आँखों में
मेहनत का इक सपना छुआ
आज चोटी से नीचे
देखता खुद के निशान

ख्वाहिश लिए दिल में
अब छूना है आसमान
ख्वाहिश लिए दिल में
अब छूना है आसमान
अब छूना है आसमान

-विमल किशोर
(प्रारूपकार)
जल संसाधन प्रभाग

“12 प्र”

राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना पर आधारित है। इस संदर्भ में और माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा ‘‘समृति विज्ञान’’ (**Mnemonics**) से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने राजभाषा हिन्दी के सफल कार्यान्वयन के लिए 12 ‘‘प्र’’ की रूपरेखा बनाई है जिसके स्तंभ हैं :–

- प्रेरणा (**Inspiration and Motivation**)
- प्रोत्साहन (**Encouragement**)
- प्रेम (**Love and affection**)
- प्राइज अर्थात पुरस्कार (**Rewards**)
- प्रशिक्षण (**Training**)
- प्रयोग (**Usage**)
- प्रचार (**Advocacy**)
- प्रसार (**Transmission**)
- प्रबंधन (**Administration and Management**)
- प्रमोशन (पदोन्नति) (**Promotion**)
- प्रतिबद्धता (**Commitment**)
- प्रयास (**Efforts**)

हिंदी दिवस पर हमने ठाना है
लोगों में हिंदी का स्वाभिमान जगाना है,
हम सब का अभिमान है हिंदी
भारत देश की शान है हिंदी...

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं,
पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो,
ये मैं सह नहीं सकता।
-आचार्य विनोबा भावे

वक्ताओं की ताकत भाषा
लेखक का अभिमान हैं भाषा
भाषाओं के शीर्ष पर बैठी
मेरी प्यारी हिंदी भाषा...

एकता की जान है,
हिंदी भारत की शान है।

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है,
जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की
अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।
-मैथिलीशरण गुप्त

राष्ट्रभाषा के बिना,
एक राष्ट्र गूंगा है।
-महात्मा गांधी

अगर भारत का करना है उत्थान
तो हिन्दी को अपनाना होगा
अंग्रेजी को ''विषय-मात्र'' और
हिंदी को ''अनिवार्य'' बनाना होगा।

भारत की गौरव गाथा का सरताज है हिंदी,
चाहे हम कितनी भी भाषाएं बोले,
पर हमारी पहचान है हिंदी

हिंदी सिर्फ हमारी भाषा नहीं,
हमारी पहचान भी है।
तो आइये हिंदी बोलें,
हिंदी सीखें और हिंदी सिखाएं।

देश के सबसे बडे भू-भाग में बोली जाने वाली
हिन्दी राष्ट्रभाषा - पद की अधिकारिणी है।
-सुभाषचन्द्र बोस

भारत मां के भाल पर सजी स्वर्णिम बिंदी हूं,
मैं भारत की बेटी आपकी अपनी हिंदी हूं।

ISO 9001:2015

वाप्कोस लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल शक्ति मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Jal Shakti

पंजीकृत कार्यालय : 5वां तल, "कैलाश", 26, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली - 110 001
दूरभाष : +91-11-23313131, 23313881 फैक्स : +91-11-23313134, 23314924 ई-मेल: ho@wapcos.co.in
निगमित कार्यालय : 76-सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-18, गुरूग्राम-122015, हरियाणा
दूरभाष : +91-124-2399428 फैक्स : +91-124-2397392 ई-मेल: mail@wapcos.co.in
ई-मेल : hindi@wapcos.co.in वेबसाइट : http://www.wapcos.co.in